श्रीवल्लभ-वंशवृक्ष



श्रीविट्ठलेश-जयन्ती
२०४१ वि०

सम्पादक ।
(नि. ली.) गो. श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज
(श्रीमद्वल्लभाचार्य-तृतीय पीठाधीश्वर)
कांकरोली
[सं. २००४ वि.]



संशोधित संस्करण-संयोजक :
श्रीमद्वल्लभाचार्य-तृतीय पीठाधीश-
गो० श्रीव्रजेशकुमारजी महाराज
कांकरोली [राज.]
[सं. २०४१ वि.]



श्रीमद्वल्लभ-वंशज-गोस्वामि-परिषद्
की
आज्ञानुसार प्रकाशित

हमारा दृष्टिबिन्दु !

इतिहास हमारे विगत जीवन का–भूले हुए अतीत का एक उज्जवल प्रतिविम्ब है। उससे हमारे आज के जीवन को भी एक प्रकाश मिलता है, एक बल और एक प्रेरणा मिलती है। हमारे इतिहास की शतश: विमल विभूतियाँ अपने आदर्श चरित्र और दिव्य प्रेरणाओं से अपने-अपने समय में हमारे राष्ट्रीय वा जातीय जीवन का निर्माण करती रही हैं।

इतिहास किसी राष्ट्र, जाति वा वंश के जीवन का भाष्य है तो वंशावलियाँ उसके लिये सूत्र-रूप। इतिहास की रक्षा और उसके साङ्गोपाङ्ग अस्तित्व के लिये वंशावलियों वा वंशवृक्षों का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे जीवन का प्रवाह अनादि काल से अविच्छिन्न रूप में चला आ रहा है। जीवन के मूलस्रोत तक पहुंचने की समस्त शृंखलाओं को हम पा नहीं सकते, तथापि अन्तिम किसी एक परम्परा वा केन्द्रबिन्दु को पकड़कर उसे अपने वर्तमान उद्भव का मूल मान लेते हैं और एक वृक्ष की तरह अपने वंश की विभिन्न शाखा-उपशाखादि दलों के बिखरे रूप को उस मूल से परम्परागत ग्रन्थिबद्ध कर उसे वंशबृक्ष का रूप दे देते हैं।

हमारा मूल उद्गम दक्षिण भारत का आन्ध्र देश है। सोलहवीं शताब्दी में कांकरवाड़ ग्राम-वासी पञ्चद्राविड़ान्तर्गत तैलङ्ग ब्राह्मण कुल में,जो कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तरीय शाखाध्यायी आङ्गिरस-वार्हस्पत्य-भारद्वाज त्रिप्रवरान्वित खंभंपाटिवारू अवटङ्कीय कुटुम्ब था, श्रीलक्ष्मणभट्टजी (दीक्षित) नामक एक सर्व विदित महापुरुष हुए हैं। इन्ही के यहां,इनके कुटुम्ब में सौ सोमयज्ञ पूर्ण हो जाने पर स्वयं श्रीमद्भगवद्वदनानलावतार श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभु का श्रीइल्लमागारु के गर्भ से प्राकट्य होकर चम्पारण्य (रायपुर म.प्र.) के सुरम्य पुनीत स्थल में वैशाख कृष्णा ११।१५३५ वि, के दिन प्रादुर्भाव हुआ। भूतल पर प्रादुर्भूत होकर आपश्री ने किस प्रकार दैवी जीवों का उद्धार किया, अपने प्रकाण्ड पाण्डित्य के द्वारा उस समय सर्वत्र प्रस्तरित मायावाद का निरसन कर अपने ब्रह्मवाद, श्रीविष्णु-स्वामिमतानुवर्ति शुद्धाद्वैत-पुष्टिमार्ग वा सेवा-प्रणाली आदि का स्थापन कैसे और कहाँ किया तथा अपने अशेष माहात्म्य को अपने वंश में प्रस्थापित कर अनन्तर आनुवंशिक आचार्य परम्परा द्वारा किस प्रकार विश्व का कल्याण किया : यह स्वतन्त्र इतिहास का विषय है, जिसका अनेक विद्वानों ने चरित्रचित्रण किया है और किया जायगा। यहाँ तो हम केवल आचार्य-चरणों की वंशावली वा वंशबृक्ष के सम्बन्ध में ही प्रकाश डाल रहे हैं।

श्रीमहाप्रभुजी से हमारी साम्प्रदायिक-आचार्य-परम्परा, हमारी वंश-परम्परा विशिष्ट रूप से चलती है। अतएव हमारा वंश 'श्रीवल्लभ-कुल' के नाम से विख्यात है। हम गोस्वामी, गुसांई या गोस्वामिबालक कहलाते हैं। श्रीमहाप्रभुजी ही हमारे मूल पुरुष हैं। श्रीमहाप्रभुजी के यहां दो पुत्र-रत्नों का जन्म हुआ, श्रीगोपीनाथजी (१५६८) और श्रीविट्ठलनाथजी (१५७२) जो 'श्रीगुसांईजी' वा 'प्रभुचरण' नाम से सम्प्रदाय में सुविदित हैं। श्रीगोपीनाथजी के श्रीपुरुषोत्तमजी (१५८७) का जन्म हुआ, इसके आगे यह परम्परा यहीं परिसीमित हो जाती है। श्रीगुसाईंजी के दो पत्नियों–श्रीरुक्मिणी और पद्मावती से सात आत्मज और चार कन्याओं का प्रादुर्भाव हुआ, जिनके नाम ये हैं–श्रीगिरिधरजी, श्रीगोविन्दरायजी, श्रीबालकृष्णजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्रीरघुनाथजी,श्रीयदुनाथजी और श्रीघनश्याम जी। श्रीगुसाईंजी ने गोकुल में स्थायी निवास करके अपने सातों पुत्रों को स्वोपार्जित सम्पत्ति के विभाजन–पूर्वक प्रत्येक के माथे एक-एक निधि पधरायीं। चार कन्याएँ सहागत जातीय चार कुलों में ब्याही गईं, जिनके पृथक् वंश हैं, जिन पर अन्यत्र प्रकाश डाला जायगा।

इस प्रकार सात पुत्रों ने अपने पृथक-पृथक सात संस्थान प्रवर्त्तित किये, जो 'सात घर' वा 'गादी' के नाम से विख्यात हैं। और सम्प्रदायों की तरह हमारे यहाँ ये सातों घर "पीठ" नहीं कहलाते, अपितु भावना और इतिहास की दृष्टि से श्रीनन्दराय के घर के रूप में 'सात घर' कहलाते हैं। इन्हीं सात घरों के वंशवृक्ष हम आज एक नवीन और सर्वथा मौलिक रूप में यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

हमारी दृष्टि में आज तक के प्रस्तुत अनेक प्राचीन और नवीन लिखित, मुद्रित वा लिथो रूप में वंशबृक्ष, कल्पबृक्ष वा वंशावलियाँ आईं और सभी में एक ही पद्धति पायी गयी—वह यह कि, सातों लालजियों के घरों का वंश-विस्तार वहीं तक किया गया है, जहाँ तक कि उन-उन घरों की औरस-परम्पराएँ चलती हैं। इस दृष्टि से आज सातों पुत्रों में से केवल श्रीगिरधरजी और श्रीयदुनाथजी के ही दो वंश चल रहे हैं और उन्हीं की परम्पराएँ सर्वत्र व्याप्त हैं, अर्थात् शेष बालकों की वंश-समाप्ति हो गयी है और इन्हीं दा घरों से प्राप्त दत्तकों से उन शेष घरों की आज तक की परम्पराएँ विद्यमान हैं। यह होते हुए भी उन शेष घरों की किसी भी वंशबृक्ष में श्रीगुसाइंजी से लेकर आज तक की समस्त क्रमागत आनुवंशिक परम्पराएँ व पीढ़िया हम नहीं पा सकते। उदाहरणार्थ–तृतीय पुत्र श्रीबालकृष्णजी के छ: पुत्रों के वंशों में से श्रीद्वारकेशजी (१६३०) तथा श्रीपीताम्बरजी (१६३६) के वंश व घर क्रमश: कांकरोली और सूरत में आज भी विद्यमान हैं। किन्तु सभी वंशबृक्षों में श्रीद्वारकेशजी की तिलाकायत-परम्परा श्रीब्रजभूषणजी (१८३५) और श्रीपीताम्बरजी की श्रीव्रजरायजी (१८६२) तक ही उल्लिखित मिलेगी। आज जब कि तृतीय गृह या इसी प्रकार सातों घर विद्यमान हैं, उनके उत्तराधिकारी व तिलकायत और उनके कुटुम्ब उपस्थित हैं, तब उनका परम्परागत निदर्शन क्यों नहीं होना चाहिये था ?

हुआ यह है कि सभी वंशबृक्ष-निर्माताओं ने जिस घर की जो परम्परा जहाँ समाप्त हो गई है, वहाँ से आगे जो भी बालक दत्तक (गोद) रूप में, किसी दूसरे घर से आकर उस घर में बैठे हैं, उसको और उसके आगे की आज तक की परम्परा को उस घर में न जोड़ कर वहीं श्रीगिरिधरजी या श्रीयदुनाथजी अथवा तदन्तर्गत घरों में, जहाँ से वे दत्तक आये हैं, चलने दिया है और इस प्रकार आज के सातों घर और तदन्तर्गत कुटुम्ब इन्हीं दो घरों के वंशबृक्षों में मिल सकते हैं। दत्तक भी जो भिन्न-भिन्न घरों में आये वा गये हैं, वे भिन्न भिन्न कुटुम्बों में वा से आये वा गये हैं। अतएव किसी एक कुटुम्ब की मूल आचार्यों तक सम्पूर्ण परम्परा बताने के लिये हमें अनेक कुटुम्बों का मंथन करना पड़ेगा-जनश्रुतियों का सहारा लेना पड़ेगा। फिर भी हम निश्चित रूप से वे नाम कहाँ से आये वा गये हैं, यह नहीं जान सकते, क्योंकि दिये हुए वंशबृक्षों में, किस परम्परा वा शाखा में कौन–कहाँ से गोद आया वा गया है, यह निर्दिष्ट नहीं किया गया है। हाँ, गोस्वामियों के घरों में–वह भी सर्वत्र नहीं-अवश्य इस प्रकार की क्रमागत परम्परा सहित उन उन घरों के वंशबृक्ष, कल्पबृक्ष वा वंशावलियाँ प्राप्त होती हैं; किन्तु उनमें भी गोद आने-जाने के स्थान का उल्लेख नहीं !

वंशबृक्षों की आज तक की पद्धति से किसी भी घर की श्रीगुसाइंजी से लेकर विद्यमान समय तक की पीढ़ियाँ गिनने में बड़ी असुविधा और भ्रम पड़ जाता है, क्योंकि किसी भी घर का सम्पूर्ण वंशबृक्ष हमारे सामने उपलब्ध नहीं है। इस स्थिति में आशौच, अधिकार आदि सङ्गों पर बड़ा मतिभ्रम हो सकता है ! यह तो एक निश्चित व्यवहार और वैधानिक नीति की बात है कि जब कोई भी बालक अपने घर से दूसरे घर में जाकर गोद बैठ जाता है, भले ही एक कुटुम्ब में हो या कुटुम्बान्तर में, उसका अपने मूलवश, घर वा पितृकुल से कोई भी संबंध वा बन्धन-वैधानिक, शास्त्रीय, व्यावहारिक-नहीं रहता ! उसे न अपने मूल घर से उत्तराधिकार प्राप्त है; न सापिण्ड्य आशौच और न किसी प्रकार का जातीय व सामाजिक व्यवहार ही। इसी प्रकार निकटतम उत्तराधिकारी ही गोद लिया जाय, यह अनिवार्य नहीं होता-गोद किसे और कहाँ से लेना, यह गोद लेने वाले की स्वतन्त्रता पर है। हाँ, किसी समाप्त-वंश के घर पर उत्तराधिकार अवश्य ही उसी कुटुम्ब के निकटतम व्यक्ति का होता है। हमारे यहाँ तो यद्यपि अपने ही कुल-वल्लभ वंशज-गोस्वामियों में से ही दत्तक लिये वा दिये जाते हैं, अत: गोत्रोच्छेद की स्थिति नहीं आती, तथापि दत्तक का स्वरूप तो रहता ही है, भले ही फिर दत्तक-विधान हो या न हो ! गोद की स्थिति में उनकी पीढ़ियों के अनुसार उत्तराधिकार, आशौच और जातीय व्यवहार भी प्राय: पृथक् हो जाते हैं। प्रचलित वंशबृक्षों में जहाँ समानान्तर पीढ़ियों का पता नहीं लगता वहाँ समकालीन पुरुषों का भी परिज्ञान नहीं हो पाता, जो इतिहास समझने के लिए अच्छा सूत्र है। यह कठिनता तब और हो जाती है जब समान नामधारी एक ही वंश में कई पुरुषों का उल्लेख मिलता है।

इस दृष्टि से प्रत्येक घर वा तदन्तर्गत कुटुम्बों की मूल आचार्यो से लेकर आज तक की आनुवंशिक परम्परा दिखलाते हुए पृथक्-पृथक् स्वतन्त्र वंशबृक्ष निर्माण करने की आवश्यकता अनिवार्यत: अनुभव की गयी और हमने अनेक वंशबृक्ष-वंशावलियों का संकलन, अनुशीलन और गवेषण कर वर्त्तमान में जितने भी गोस्वामियों के घर विद्यमान हैं, उनके पृथक-पृथक वंशबृक्ष तैयार किये। इनमें जिन-जिन बातों का विशेष ध्यान रखा गया है, वे इस प्रकार हैं—

(i) किसी भी घर की शाखा वहीं से पृथक् की गयी हैं, जहाँ से उसके मूल-पुरुष पृथक् होते हैं। इस पद्धति से यह भी सुविधा रही है कि एक वंश एक ही पत्र पर व्यवस्थित रूप में आ गया है। उदाहरणार्थ-तृतीय पुत्र श्रीबालकृष्ण जी के घर के जो आज कांकरोली और सूरत के दो घर विद्यमान हैं, उन्हें पृथक् पृथक् दो बृक्षों में मूल श्रीद्वारकेश जी और श्रीपीताम्बरजी से ही अलग करके दिखा दिया गया है।

(ii) जिन भाइयों के वंश परिसमाप्त होगये हैं, उन्हें क्रमश: सुविधानुसार किसी भी भाई के विद्यमान वंशों के साथ जोड़ दिया गया है।

(iii) जब एक घर के कई भाग करने पड़े हैं तो उनका निदर्शन उस घर की संख्या के साथ अंक (बटे) देकर उसके अन्तर्गत आने वाले उपगृहों के नामोल्लेख सहित कर दिया गया है।

(is) वंशबृक्षों में जिन घरों, शाखाओं वा दत्तक गये व्यक्तियों का निदर्शन उस मूल-पुरुष से सम्बन्ध रखते हुए अपेक्षित नहीं है, उसे देखो (···अमुक गृह), अथवा गोद गये (····अमुक गृह में) लिख कर वहां छोड़ दिया गया है। उदाहरणार्थ– तृतीय। १ गृह में केवल श्रीद्वारकेशजी (कांकरोली) का वंशवृक्ष मिलेगा—दूसरे छहों पुत्रों

वा श्रीद्वारकेशजी के भाइयों अथवा श्रीपुरुषोत्तमजी (१७३८) सरीखे गोद गये आदि नामों की वंश-परम्परा निर्दिष्ट संख्या वाले वंशबृक्ष में ही मिलेगी।

(v) गोद गये वा आये हुए व्यक्तियों को निर्दिष्ट संख्या वाले वंशबृक्ष में सरलता और निश्चित रूप में पाया वा पहिचाना जा सके, इसके लिये वे व्यक्ति, जिनके यहाँ गोद गये वा जिनके यहाँ से गोद आये हैं, उनके पितृ-नामों का जन्म संवत् सहित उल्लेख एक संकेत-चिह्न देकर विशेष टिप्पणी में प्रत्येक पत्र के एक पार्श्व में कर दिया गया है। जहाँ किसी वंशवृक्ष के व्यक्ति उसी वंशबृक्ष में गोद आये वा गये हैं, उनके निदर्शन के साथ केवल 'गोद आये-गये' का उल्लेख कर टिप्पणी में उसी प्रकार जन्म संवत् सहित पितृनाम दे दिया गया है।

(vi) जिन व्यक्तियों के कोई विशेष उपनाम, निवासस्थान, ऐतिहासिक वा साम्प्रदायिक महत्व प्राप्त हैं, उनके साथ उनका उल्लेख भी कर दिया गया है। इस दृष्टि से उनके कार्य-कलाप, निवास, क्रमशः संस्थान-प्रतिष्ठापन आदि का भी संकेत मिल जाता है।

(vii) वंशदृक्ष की पृथक्-पृथक् मूल पुरुष व भाइयों की परम्परा वा पीढियों को इस ढंग से रखा गया है कि मूल पुरुष से समान पीढी में आने वाली वंश की सभी सन्तति एक ही श्रेणी में वा पंक्ति में समानान्तर रूप में दिखती रहें, जिससे कि पीढी गिनने में सुविधा के साथ-साथ यह निदर्शित होता रहे कि एक भाई की शाखा की अमुक सन्तति दूसरे भाई की शाखाकी सन्तति की किस कोटि में आती है-भ्रातृ, पितृ वा पितृव्य-कोटि और किस पीढी और श्रेणी में ! उदाहरणार्थ–तृ।१ गृह में श्रीद्वारकेशजी (१६३०) श्रीब्रजभूषणजी (१६३६), श्रीव्रजालङ्कारजी (१६४१) आदि भाइयों से चतुर्थ पीढी में आने वाले श्रीगिरिधरजी (१७४५), श्रीव्रजभूषणजी (१७१५), श्रीपुरुषोत्तमजी (१७३८) आदि सभी क्रमशः एक ही पंक्ति, समान पीढी में दिख रहे हैं।

(viii) एक शाखा से उठ कर दूसरी शाखा में गोद जाकर जुड़ जाने की स्थिति में कभी-कभी अमुक व्यक्ति अपनी मूल पीढ़ी से ऊपर वा नीचे होगये हैं। किन्तु जब अमुक व्यक्ति गोद जाता है तो निश्चित रूप से उसे उस व्यक्ति के नीचे सन्तति-स्थान में आना पड़ेगा–फिर भले ही गोद जाने वाला व्यक्ति उस व्यक्ति के पितृ-पितृव्य, भ्रातृ अथवा पुत्र-पौत्रादि कोटि में हो। उदाहरणार्थ–तृ०।१ गृह में श्रीपुरुषोत्तमजी (१८४७) जब भ्रातृ-कोटि के श्रीब्रजभूषणजी (१८३५) के यहाँ गोद जाते हैं, तो निश्चित रूप से उन्हें सन्तति-स्थान में लाकर–एक पीढ़ी उतार कर वंशबृक्ष में दिखाया गया है। इसी तरह श्रीविट्ठलनाथजी (१९७०) जब अपने प्रपितामह कोटि के श्रीगोपालजी (१९१०) के यहाँ गोद जाते हैं, तो वे सहसा अपने श्रीब्रजभूषणजी (१९६८) की भ्रातृ कोटि से दो पीढ़ी ऊपर उठ कर अपनी पितामह की कोटि में आ जाते हैं। इस प्रकार का व्यतिक्रम गोद की स्थिति में अनिवार्य है।

(ix) प्रत्येक व्यक्ति के साथ उनके जन्म-संवत् यथोपलब्ध रूप में दे दिये गये हैं—कुछ के सम्बन्ध में द्वैविध्य प्राप्त होने पर भी जो ऐतिहासिक संगति से हमने उचित समझे हैं, उन्हें ही निश्चित रूप से दे दिये हैं। कुछ विद्यमान बालकों के संवत् पूछने पर भी अज्ञात होने से रह गये हैं। संवतों से उनकी ऐतिहासिक स्थिति समसामयिकता वा पूर्वापरता और संगति लगाने एवं ऐतिह्य-निर्माण में बहुत सहायता मिलेगी एवं वंशवृक्षों में सरलता पूर्वक प्राप्त करने वा पहिचानने में सुविधा रहेगी।

(x) जिन व्यक्तियों की वंश-परम्परा समाप्त हो गयी है वा अज्ञात है, उनके नामों के नीचे ० और विद्यमान व्यक्तियों के नीचे ❀ चिह्न देकर उनके निवास-स्थान का उल्लेख कर दिया है।

(xi) साधारणतया श्रीगुसाईजी से लेकर अद्यावधि विद्यमान गोस्वामियों तक कोई १८ पीढ़ी के आस-पास व्यतीत हुई हैं। किन्तु अनेक वंशबृक्षों में बहुत थोड़ी पीढ़ी प्राप्त होंगी। उदाहरणार्थ—चतुर्थ एवं सप्तम गृह में आज तक कुल ८-१० ही पीढ़ी प्राप्त हैं। उसका कारण यह है कि इन घरों में तथा ऐसे अन्य कुछ घरों में भी जो गोद परम्परा चली है, वह बीच में बहुत लम्बा व्यवधान ले-लेकर। अर्थात जब किसी घर की कोई परम्परा निस्संतति समाप्त हो जाती है, तो बहुत समय तक उस घर पर अधिकार उस निस्संतान-गोस्वामी की बहूजी का अथवा निकट कुटुम्बी जनों का निजी रूप से रहा हैं और अपनी अन्तिमावस्था में—अथवा यदि उन बहूजी (सास) की भी कोई बहूजी (बहू) हुईं तो उनकी अन्तिमावस्था में—अन्य बालक गोद लिये गये है, जिससे कि उस बीच में कोई दो-चार पीढ़ी का अन्तर पड़ गया है। अतएव इतनी थोढ़ी पीढ़ी देखकर किसी को परम्पराओं की साङ्गोपाङ्गता पर भ्रम हो सकता है, परन्तु वस्तुतः वे परम्पराएं कम होते हुए भी पूर्ण और प्रामाणिक हैं।

(xii) इन वंशबृक्षों में यद्यपि क्रमश: ज्येष्ठ संतति की परम्परा देखते हुए सभी घरों की तिलकायत-परम्परा का निदर्शन हो जाता है; तथापि कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अमुक कारणवश ज्येष्ठ पुत्र तिलकायत न होकर उनके कनिष्ठ हुए हैं अथवा ज्येष्ठ पुत्र की वंश-समाप्ति अथवा अल्प-वय में निधन के अनन्तर उनके भ्राता उस घर के तिलकायत हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में केवल ज्येष्ठ पुत्रों की परम्परा गिनने से ही उस घर के समस्त टीकैतों की गणना नहीं होगी। इस सम्बन्ध में तत्तद्गृहों से पृथक् जानकारी लेनी होगी। हमने सभी घरों की तिलकायत-परम्परा मंगायी थी, किन्तु खेद है कि अधिकांश महानुभावों ने हमें यह जानकारी नहीं भेजी। अत: हम टीकैत परम्परा का पृथक् निदर्शन नहीं कर सके हैं।

(xiii) किसी-किसी घर में ऐसा हुआ है कि एक ही व्यक्ति के दूसरे किसी घर भी गोद जाकर उनका अधिकार दोनों वा कभी-कभी दो से भी अधिक घरों पर रहा है और अनन्तर उनकी संततियों में उन घरों का विभाजन हुआ है। उदाहरणार्थ–प्र०।५ गृह में श्रीजीवनलालजी, पोरबन्दर (१९१६) के पुत्र श्रीरणछोड़लालजी (१९३८) द्वि०।२ गृह (लालबाबा) में श्रीघनश्यामजी (१९२८) के यहां भी गोद जाकर दोनों घरों के अधिपति रहे हैं और अनन्तर उनकी दो सन्ततियों में विद्यमान पोरबन्दर और लालबाबा के घरों का पृथक्करण हुआ है। यही संयुक्त अधिकार की स्थिति चतुर्थ पञ्चम गृह में श्रीवल्लभलालजी (१९४८) (गोकुल-कामवन) के समय से आज तक रही। ऐसी स्थिति में हमने दोनों घरों में उन व्यक्तियों को दिखलायें हैं–विभाजन के साथ परम्पराओं को पृथक् किया है।

(xiv) जिन घरों की वंश-परम्परा समाप्त हो गयी है और वे उत्तराधिकार की दृष्टि से जिस व्यक्ति के अधिकार में आये हैं, उन सभी घरों में पृथक्-पृथक् उस व्यक्ति को हमने नही दिखाया है; क्योंकि वे उन सभी घरों में गोद नहीं गये हैं–उत्तराधिकार प्राप्त है। उदाहरणार्थ–तृ०।१ गृह में यद्यपि श्रीरणछोड़जी, बुरहानपुर (१७१५) का एक स्वतन्त्र घर है, जिनकी परम्परा में श्रीगोकुलनाथजी (लल्लूजी. सूरत) (१८००) का घर भी आता है। किन्तु क्योंकि यह घर वंश-समाप्ति के अनन्तर कांकरोली के तिलकायत के ही अधिकार में आता है, अत: तत्कालीन कांकरोली के तिलकायत की परम्परा उसमें भी पृथक् नहीं दिखायी है।

(xv) कभी-कभी ऐसा होता है कि एक व्यक्ति अपनी बहूजी और एक पुत्र को छोड़कर गत हो जाते हैं और अनन्तर उस पुत्र के भी सन्तति न होने और गत हो जाने के कारण उनकी बहूजी रह जाती हैं, इस प्रकार उस घर में सास-बहू, दो उत्तराधिकारी रहते हैं। अब किसी विमनस्कता के कारण दोनों पृथक्-पृथक् दो व्यक्ति गोद लेते हैं। किन्तु वैधानिक और जातीय-पद्धति के अनुसार गोद लेकर किसी घर का किसी को उत्तरा-कारी वा टीकैत बनाने का अधिकार सास को ही होने से उन बहूजी (सास) के लियें हुए व्यक्ति ही उस घर के टीकैत होते हैं और बहूजी (बहू) के द्वारा लिये हुए व्यक्ति अनन्तर आने वाले–यद्यपि ज्येष्ठ पुत्र की परम्परा में उन्हीं (बहू) के द्वारा लिये हुए व्यक्ति की सन्तति आती है। उदाहरणार्थ-प्र०।७ गृह कोटा में श्रीमथुरेशजी के घर के टीकैत रूप में श्रीरणछोड़-लालजी (१९०८) के बहूजी द्वारा लिये हुए श्रीद्वारकेशजी (१९४४) यद्यपि टीकैत हैं, तथापि आनुवंशिक ज्येष्ठ सन्तति की परम्परा के रूप में श्रीजीवनलालजी (१९३७) के बहूजी द्वारा गोद लिये हुए श्रीदीक्षितजी (१९७१) ही प्रथम दिखाये गये हैं।

(xvi) हमारे यहां कभी कभी ऐसी भी स्थिति आती है कि किन्हीं गोस्वामी वा बहूजी के द्वारा अमुक बालक गोद ले लिये जाते हैं। अनन्तर अमुक कारणों से दूसरे बालक को गोद ले लिया जाता है। उदाहरणार्थ–वर्तमान में श्रीगोपेश्वरलालजी (१९४६) के बहूजी ने द्वितीय/१ गृह (श्रीविठ्ठलनाथजी) में श्रीगिरिधर-लालजी (इन्दौर) को एक बार गोद ले लिये है, अब किसी कारण से पुन: प्र./६ गृह से श्रीकृष्णजीवनजी (बम्बई) के पुत्र श्रीश्यामसुन्दरजी को गोद ले लिया है। ऐसी विवादास्पद स्थिति में सम्प्रति हमने पूर्व दत्तक श्रीगिरधरलालजी को ही इस घर की तिलकायत परम्परा में दिखाया हैं–द्वितीय दत्तक को नहीं। हम अपनी ओर से–कौन तिलकायत हैं, कौन नहीं-इसका कोई निर्णय नहीं देना चाहते। जो वस्तु हमारे सामने अभी तक थी, हमने उसे अविकल दे दिया है। दत्तक लेने देने वाले दोनों पक्षों में आगे जो भी वैधानिक रीति से समाधान हो जायगा और अन्तिम निर्णीत वस्तु दोनों पक्षों की सहमति से हमें विदित होगी, हम तदनुसार उल्लेख कर देंगे। यों हम अपने दृष्टिविन्दु से इस विषय में दोनों पक्षों से तटस्थ हैं—हमें किसी भी पक्ष से न कोई आपत्ति है, न किसी के प्रति समर्थन। (अब तो यह यथास्थिति निर्णीत है)

(xvii सम्प्रदाय में, जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है, श्रीगुसांईजी के सात पुत्रों के सात घर विद्यमान हैं। इनमें भी आद्यावधि षष्ठ गृह के सम्बन्ध में विवाद है

इन वंशवृक्षों का उद्देश्य प्रत्येक घर की आज तक की आनुवंशिक परम्परा दिखाना है-किस घर का तिलकायतत्व, उत्तराधिकार अथवा अमुक गृहत्वेन आचार्यत्व की मान्यता किसे मिलना चाहिये, इस तथ्य वा विवाद का निर्णय करना नहीं। अतएव कोई भी षष्ठ गृह मान्य किये जांय; हमारा इस बात से प्रस्तुत वंशवृक्ष के कार्य में कोई सम्बन्ध नहीं रहा है।

इस प्रकार प्रस्तुत पद्धति और सर्वथा मौलिक दृष्टिबिन्दु से इन वंशवृक्षों को तैयार किया गया है। अब सर्वसाधारण की जानकारी के लिये हम यहां सभी घरों का वर्तमान संक्षिप्त परिचय और दे रहे हैं—

प्रथम गृह—

यह श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभु के द्वितीय तनुज गुसांई श्रीविट्ठलनाथजी के प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजी (१५९७) की परम्परा है। श्रीगिरिधरजी के तीन पुत्रों में से प्रथम पुत्र श्रीमुरलीधरजी (१६३०) के अल्प वय में गत हो जाने पर प्रथम तिलकायत द्वितीय पुत्र श्रीदामोदरजी (१६३२) हुए। बड़े होने के कारण आपके माथे श्रीनाथजी एवं श्रीनवनीतप्रियाजी विराजे और प्रथम गृह के तिलकायत रूप में श्रीमथुरेशजी उनके अनुज श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) (१६३४) के यहां पधराये गये। प्रथम गृह के अन्तर्गत निम्नलिखित वंशवृक्ष प्रस्तुत किये गये हैं—

(i) प्रथम/१ गृह: नाथद्वारा (तिलकायत)—
श्रीदामोदरजी के द्वितीय पुत्र श्रीविट्ठलरायजी (१६५७) के प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजी (१६८९) से प्रारम्भ होकर यह घर सम्प्रदाय का प्रमुख पीठ-स्थान तिलकायत वा टीकैत (श्रीनाथजी) का घर कहलाता है, जिसमें श्रीनाथजी एवं श्रीनवनीतप्रियाजी विराजते है। इसके वर्तमान अधिपति गो० ति० श्रीगोविन्दलालजी म. हैं। इसी घर के अन्तर्गत श्रीविट्ठलरायजी के द्वितीय पुत्र श्रीकाकावल्लभजी (१७०३) के वंश में श्रीगोकुलाधीशजी, श्रीलालजी, अमरेली, पोरबन्दर (गोपीनाथजी हवेली), वड़ामन्दिर (बम्बई) आदि घर आते हैं।

(ii) प्रथम/२गृह: बम्बई (गोकुलाधीशजी)—यह घर श्रीकाकावल्लभजी के सात पुत्रों में से प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजी (१७२८) का वंश है। श्रीगिरिधरजी की छठी पीढ़ी में आगत द्वितीय श्रीमथुरानाथजी (कोटा) (१८२८) के प्रथम पुत्र श्रीद्वारकेशजी (घन्नूजी, जतीपुरा) (१८५२) से यह घर पृथक् चलता है। इसके अधिपति श्रीमुरलीधरजी, वेट (१९१३) के पुत्र गो० श्रीगोपिकावल्लभजी (मगनजी) म. थे, और अब गो. श्रीरसिकवल्लभजी हैं, जिनके माथे विराजते हैं।

(iii) प्रथम/३ गृह: बम्बई (श्रीलालजी)—यह घर उक्त श्रीमथुरानाथजी के चतुर्थ पुत्र श्रीव्रजरत्नजी (मगनजी) (१८६७) से पृथक् होता हैं। इसके वर्तमान अधिपति श्रीवागधीशजी [१९४१] के पुत्र गो० श्रीविट्ठलेशजी म. हैं, जिनके माथे विराजते हैं।

[iv] प्रथम/४ गृह: बम्बई-बेट [अमरेली]—यह घर श्रीकाकावल्लभजी के द्वितीय पुत्र श्रीमुरलीधरजी [१७३१] का वंश है। इसके अधिपति गो० श्रीपुरुषोत्तमलालजी म. थे अब गो. श्रीजीवनजी म. हैं, जिनके माथे·········विराजते हैं।

[v] प्रथम/५ गृह: पोरबन्दर [गोपीनाथजी हवेली]-कटरा वाला मन्दिर [गोकुल]—यह श्रीकाकावल्लभजी के तृतीय पुत्र श्रीगोपालजी [१७३३] का वंश है। श्रीगोपालजी के तृतीय पौत्र श्रीलक्ष्मणजी [१७८७] के प्रथम पुत्र श्रीद्वारकानाथजी [१८१३] से पृथक् चलता है। इसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीगोविन्दरायजी [विठ्ठलनाथजी म.] हैं, जिनके माथे ···· विराजते हैं।

उक्त श्रीलक्ष्मणजी के द्वितीय पुत्र श्रीगोवर्धनजी [१८१७] से पृथक् होकर कटरावाला मन्दिर [गोकुल] का घर चलता है, जिसके अधिपति गो० श्रीगोपिकावल्लभजी म० [बम्बई] के पुत्र गो० श्रीमुरलीधरजी म० थे, और जिनके माथे·········विराजते हैं।

(vi) प्रथम/६ गृह: बम्बई (वड़ा मन्दिर)—यह घर श्रीकाकावल्लभजी के सप्तम पुत्र श्रीगोकुलनाथजी (१७५०) का वंश है। इसके अधिपति गो० श्रीकृष्णजीवनजी (गिरिधरजी) म० थे, जिनके माथे श्रीबालकृष्णलाल विराजते हैं।

(vii) प्रथम। ७ गृह: कोटा (श्रीमथुरेशजी), कृष्णगढ़—यहां से श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) का वंश चलता है। श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) के चार पुत्रों में से प्रथम पुत्र श्रीवल्लभजी (प्रभुजी) (१६६०) का-प्रथम गृह के तिलकायत (श्रीमथुरेशजी) का यह घर है। श्रीवल्लभजी (प्रभुजी) से नवीं पीढ़ी में प्रथम श्रीरणछोड़लालजी (१९०८) से इस घर की दो शाखाएँ हो जाती हैं। जिनमें प्रथम श्रीरणछोड़लालजी के पुत्र श्रीजीवनलालजी (१९३७) का कृष्णगढ़ का घर है। इसके दत्तक रूप में अधिपति श्रीगोकुलनाथजी (१९४५) के पुत्र गो० श्रीदीक्षितजी म० थे, और अब गो० श्रीश्याममनोहरजीहै। जिनके माथे विराजते हैं।

दूसरी शाखा श्रीरणछोड़लालजी के दत्तक पुत्र रूप में श्रीद्वारकेशजी (गिरिधरजी) (१९४४) का श्रीमथुरेशजी (कोटा) का घर है। इसके वर्त्तमान अधिपति गो० श्रीरणछोड़लालजी म० हैं, जिनके माथे श्रीमथुरेशजी विराजते हैं! इसी घर के अन्तर्गत अहमदाबाद, चापासेनी, माण्डवी, जामनगर, जूनागढ़, पोरबन्दर (द्वारकानाथजी हवेली), कोटा (बड़ेमहाप्रभुजी) आदि घर आते हैं।

(viii) प्रथम। ८ गृह: अहमदाबाद—यह घर श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) के द्वितीय पुत्र श्रीमथुरामल्लजी (१६६२) का वंश है। इसके अधिपति गो० श्रीरणछोड़लालजी म० थे और अब गो. श्रीव्रजरायजी म० हैं जिनके माथे श्रीनटवरलाल श्यामलाल विराजते हैं।

(ix) प्रथम। ९ गृह: चापासेनी, माण्डवी—यह घर श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) के तृतीय पुत्र श्रीगोविन्दजी (१६७३) का वंश है। श्रीगोविन्दजी के प्रथम पुत्र श्रीमुरलीधरजी (१६९९) से यह घर पृथक् चलता है। श्रीमुरलीधरजी के द्वितीय पुत्र श्रीदामोदरजी (१७२१) की शाखा में चापासेनी का घर आता है, जिसके वर्त्तमान अधिपति गो० श्रीव्रजभूषणजी म० हैं और जिनके माथे विराजते हैं। श्रीदामोदरजी के इस घर की, उनकी छठी पीढ़ी में, तृतीय श्रीकृष्णजीवनजी (कुंजालालजी) (१८८१) से पुनः दो शाखाएँ पृथक् हो जाती हैं—प्रथम शाखा में श्रीकृष्णजीवनजी के द्वितीय पुत्र श्रीमुरलीधरजी (१९०७) की परम्परा में उक्त चापासेनी का घर और द्वितीय शाखा में उनके पंचम पुत्र श्रीविट्ठलेशजी (१९१९) के पुत्र जामखंभालिया वा विलेपारला (बम्बई) के गो० श्रीव्रजनाथलालजी म० आते हैं, और अब गो० श्री त्रिभंगीलालजी है। जिनके माथे ······ विराजते हैं।

उक्त श्रीमुरलीधरजी (१६९९) के चतुर्थ पुत्र श्रीद्वारकानाथजी (१७३४) से माण्डवी का घर पृथक् होकर चलता है जिसके वर्त्तमान अधिपति गो० श्रीदामोदरलालजी म० हैं, और जिनके माथे·········विराजते हैं।

(x) प्रथम। १० गृह: जामनगर, जूनागढ़, पोरबन्दर (द्वारकानाथजी हवेली—यह घर उक्त श्रीगोविन्दजी के तृतीय पुत्र श्रीबाबूरायजी (गोपालजी) (नगर) (१७११) का वंश है। श्रीबाबूरायजी से इस घर की पृथक् शाखाएँ होजाती हैं। श्रीबाबूरायजी के प्रथम पुत्र श्रीगोवर्धनेशजी (१७२९), उनके प्रथम पुत्र श्रीवल्लभजी (१७५६) और उनके द्वितीय पुत्र श्रीगिरिधरजी (नत्थूजी) (१७९४) की परम्परा में जामनगर का घर आता है, जिसके वर्त्तमान अधिपति श्रीरघुनाथजी (१९५२) के पुत्र गो० श्रीव्रजभूषणजी म० हैं और जिनके माथे विराजते हैं।

उक्त श्रीवल्लभजी के तृतीय पुत्र श्रीमाधवरायजी [१७९९] की परम्परा में जूनागढ़ का घर आता है। इसके अधिपति श्रीरघुनाथजी [१९५२] के पुत्र गो० श्रीपुरुषोत्तमलालजी म० थे और इनके माथे विराजते हैं।

उक्त श्रीबाबूरायजी के द्वितीय पुत्र श्रीहन्नूजी [श्रीगोकुलाधीशजी] [१७४५] की परम्परा में पोरबन्दर [द्वारकानाथजी हवेली] का घर है, जिसके अधिपति श्रीरमणलालजी [१९०४] के पुत्र गो० श्रीघनश्यामलालजी म० थे और अब गो० श्रीमधुरेशकुमारजी म० हैं, जिनके माथे विराजते हैं।

[xi] प्रथम। ११ गृह: कोटा [बड़े महाप्रभुजी]—यह घर श्रीगोपीनाथजी [दीक्षितजी] के चतुर्थ पुत्र श्रीरामकृष्णजी [१६७५] का वंश है, जिसके अधिपति श्रीदामोदरजी [१९४९] के पुत्र गो० श्रीपुरुषोत्तमलालजी म० थे और जिनके माथे·························· विराजते हैं।

द्वितीय गृह

यह गुसांईजी के द्वितीय पुत्र श्रीगोविन्दरायजी [१५९८] का वंश है। श्रीगोविन्दरायजी के पंचम प्रपौत्र श्रीगिरिधरजी [१७४५] से इसकी पृथक् शाखाएँ हो जाती हैं।

[i] द्वितीय। १ गृह: नाथद्वारा, इन्दौर—
श्रीगिरिधरजी के प्रथम पुत्र श्रीरघुनाथजजी (१७६२) से पञ्चम पीढ़ी में प्रथम श्रीकृष्णरायजी [१८५७] के तृतीय पुत्र श्रीविट्ठलरायजी (१८७९) की शाखा में इन्दौर का घर आता है, जिसके अधिपति गो० श्रीकृष्णरायजी म० थे और अब गो० श्रीविट्ठलनाथजी म० हैं, जिनके माथे श्रीगोवर्धननाथजी विराजमान हैं।

उक्त श्रीकृष्णरायजी (१८५७) के चतुर्थ पुत्र श्रीकाका गिरिधरजी (१८८७) की परम्परा में इस वंश के तिलकायत (नाथद्वारा) का घर आता है, जिसके अधिपति गो० श्रीकृष्णरायजी म० के पुत्र गो. श्रीगिरिधरलालजी म० थे और अब गो. श्रीकल्याणरायजी हैं और जिनके माथे श्रीविट्ठलनाथजी विराजते हैं।

(ii) द्वितीय। २ गृह: बम्बई (लालबाबा), नडियाद—यह घर श्रीगिरिधरजी के चतुर्थ पुत्र श्रीघनश्यामजी (१७७४) का वंश है। श्रीघनश्यामजी के तृतीय पुत्र श्रीयदुनाथजी (१८१६) की पृथक् शाखा में बम्बई (लालबाबा) का घर आता है, जिसके अधिपति गो. श्रीवल्लभलालजी म० थे और जिनके माथे··············· विराजते हैं।

उक्त श्रीघनश्यामजी के पञ्चम पुत्र श्रीगोपालजी (१८२७) की परम्परा में नडियाद का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति श्रीरघुनाथजी (१६५२) के पुत्र गो० श्रीव्रजभूषणजी म. हैं और जिनके माथे......... विराजते हैं।

तृतीय गृह

यह श्रीगुसांईजी के तृतीय पुत्र श्रीबालकृष्णजी (१६७६) का वंश है। श्रीबालकृष्णजी से ही इसकी पृथक्-पृथक् शाखाएं हो जाती हैं।

(I) तृतीय ।१ गृह : कांकरोली (द्वारकाधीश) (मथुराधीश) यह घर श्रीबालकृष्णजी के प्रथम पुत्र श्रीद्वारकेशजी (१६३०) की परम्परा में है। श्रीद्वरकेशजी के प्रथम प्रपौत्र श्रीगिरिधरजी (१७४५) से पुन: इसकी शाखाएं होती हैं। श्रीगिरिधरजी के प्रथम पुत्र श्रीव्रजभूषणजी (१७६५) की परम्परा में इस वंश के तिलकायत (कांकरोली) का घर आता है, जिसके अधिपति लेखक स्वयं (श्रीव्रजभूषणजी) (प्रस्तुत वंशवृक्षों के सम्पादक) थे, और अब गो. श्रीव्रजेशकुमारजी म. हैं जिनके माथे श्रीद्वारकाधीश विराजते हैं।

उक्त श्रीगिरिधरजी के तृतीय पुत्र श्रीवल्लजी (१७८१) की परम्परा में श्रीमथुराधीश (छोटा मन्दिर) का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति श्रीबालकृष्णलालजी (१६२४) के पुत्र गो० श्रीविट्ठलनाथजी म. हैं और जिनके माथे श्रीमथुराधीश विराजते हैं।

( ) तृतीय । २ गृह : सूरत— यह घर श्रीबालकृष्णजी के चतुर्थ पुत्र श्रीपीताम्बरजी (१६३६) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीव्रजरत्नलालजी म. हैं और जिनके माथे श्रीबालकृष्णजी विराजते हैं।

चतुर्थ गृह–

यह गोकुल का घर श्रीगुसांईजी के चतुर्थ पुत्र श्रीगोकुलनाथजी (१६०८) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीदेवकीनन्दनजी म. है और जिनके माथे श्रीगोकुलनाथजी विराजते हैं।

पञ्चम गृह

यह कामवन का घर श्रीगुसांईजी के पञ्चम पुत्र श्रीरघुनाथजी (१६११) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीगोविन्दलालजी म. हैं और जिनके माथे श्रीगोकुलचन्द्रमाजी विराजते हैं।

षष्ठ गृह–

यह घर श्रीगुसांईजी के षष्ठ पुत्र श्रीयदुनाथजी (१६१५) का वंश है। श्रीयदुनाथजी से ही इसकी शाखाएँ होजाती हैं।

(i) षष्ठ । १ गृह : शेरगढ़ (बड़ौदा)—यह घर श्रीयदुनाथजी के प्रथम पुत्र श्रीमधुसूदनजी (१८३६) का वंश है। इस घर में सम्प्रति कोई बालक तिलकायत नहीं है—यह श्रीगिरिधरलालजी (१६२३) के बहूजी के ही आधिपत्य में सम्प्रति है जिनके माथे श्रीकल्याणरायजी विराजते हैं।

(ii) षष्ठ । २ गृह : मथुरा (श्रीमदनमोहनजी-दाऊजी) (श्री छोटे मदनमोहनजी)—यह घर श्रीयदुनाथजी के द्वितीय पुत्र श्रीरामचन्द्रजी (१८३८) का वंश है। श्रीरामचन्द्रजी से छठी पीढ़ी में द्वितीय श्रीव्रजपालजी (१८३६) से इसकी शाखाएँ होजाती हैं। श्रीव्रजपालजी के द्वितीय पुत्र श्रीविट्ठलनाथजी (१८७५) की परम्परा में मथुरा का श्रीमदनमोहनजी-दाऊजी का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति श्रीबालकृष्णलालजी (१६२४) के पुत्र श्रीविट्ठलनाथजी म. है और जिनके माथे श्रीमदनमोहनजी विराजते हैं।

उक्त श्रीव्रजपालजी के तृतीय पुत्र श्रीपुषोत्तमजी (१८७६) की परम्परा में मथुरा के छोटे मदनमोहनजी का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीव्रजरमणजी म. हैं और जिनके माथे श्रीमदनमोहनजी विराजते हैं।

(iii) षष्ठ । ३ गृह : काशी—यह घर श्रीयदुनाथजी के तृतीय पुत्र श्रीजगन्नाथजी (१६४२) का वंश है, जिसके अधिपति गो. श्रीत्रिलोकीभूषणजी (मुरलीधरजी) म. थे जिनके माथे श्रीमुकुन्दरायजी गोपाललालजी विराजते हैं।

सप्तम गृह -

कामवन का यह घर श्रीगुसांईजी के सप्तम पुत्र श्रीघनश्यामजी (१६२८) का वंश है, जिसके अधिपति गो० श्रीरमणलालजी म. थे और अब गो. श्रीघश्नयामलालजी म. हैं जिनके माथे श्रीमदनमोहनजी विराजते हैं।

इस प्रकार हमने अधिकाधिक उपयोगी, सरल और स्पष्ट पद्धति से इन सातों घरों के वंशवृक्षों को तैयार किया है। हमने यावदुपलब्ध साधन-सामग्री से इन्हें यावच्छक्य प्रामाणिक, परिष्कृत और व्यवस्थित बनाने का प्रयत्न किया है। इन वंशवृक्षों के मिलान और संशोधन के लिये हमने सभी घरों को इसकी प्रतिलिपियाँ भेजी थीं, किन्तु खेद है कि पर्य्याप्त प्रतीक्षा करने पर भी बहुत कम घरों से हमें संशोधन, परिवर्तन वा परिवर्द्धन प्राप्त हुए हैं। जिन घरों ने हमें इस सम्बन्ध में समुचित निर्देश वा प्रकाशन के लिये प्रोत्साहन और प्रेरणा सहित सहमति दी है, हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। जिन महानुभावों ने हमें पत्र का उत्तर देने का भी श्रम नहीं लिया और ऐसी उदासीनता से इस महत्वपूर्ण कार्य का मूल्याङ्कन किया है, उनके प्रति भी हम धन्यवाद ही प्रकट करते हैं। प्रस्तुत संस्करण बहुत थोड़ी संख्या में मुद्रित कराया है—इसी दृष्टि से कि एक बार जिस किसी भी रूप में वस्तु सामने आ जाय, फिर क्रमश: उसमें संशोधन-परिमार्जन तो होता रहेगा। अग्रिम संशोधित संस्करण आर्ट पेपर पर सचित्र और सजधज के साथ निकालने का विचार है, जो श्रीद्वारकाधीश अपने कृपाबल से यथासमय पूर्ण करेंगे।

प्रस्तुत प्रकाशन में हम निम्नलिखित प्रमुख संस्था वा व्यक्तियों का भी स्मरण दिलाते हैं, जिनको संग्रहीत, पूर्वलिखित वा प्रकाशित साहित्य-सामग्री का हमने अपने कार्य में समुचित सहयोग वा उपयोग लिया है।

१. वल्लभीय वंशकल्पवृक्ष : राजाराम गंगादास गुर्जर राजनगर (१७७६) कृत. [सरस्वती भण्डार विद्याविभाग कांकरोली : बन्ध हिन्दी ६०।७]
२. आचार्य वंशावली : केशवकिशोर (१६८०) कृत
३. वंशकल्पवृक्ष : (संस्कृत) निर्भयराम कृत
४. श्रीमद्वल्लभाचार्यनी वंश नी वंशावली : पेटलादी रणछोड़दास ब्रजजीवनदास कृत
५. श्रीवल्लभवंशावली : जगतानन्द कृत

आशा है, हमारे गोस्वामिबन्धुओं एवं वैष्णवों को यह संग्रह उपादेय, रुचिकर और ऐतिह्य-निर्माण में सम्यक् सहायक सिद्ध होगा। हम यहां अग्रिम प्रकाशन की सफलता के लिये श्रीप्रभु से आन्तरिक कामना करते हुए अपना बक्तव्य समाप्त करते हैं। शम्.

भवदीय—

श्रीकृष्णजयन्ती, २००४
कांकरोली

गो. श्रीव्रजभूषण शर्मा
मंत्री :
श्रीमद्वल्लभवंशज गो.परिषद

●●● प्रथम संस्करण (२००४ वि.) के बाद से प्रस्तुत द्वितीय संस्करण (२०४१ वि.) के मध्य जो भी परिवर्तन हुआ है (घरों के तिलकायत वा निवास, स्वामित्व में) उसका निदर्शन पारिशोधन प्रस्तुत संस्करण में दिया गया है, ताकि अद्यतन ऐतिह्य तथ्य से विसंगति न रहे (संशोधित संस्करण-संयोजक)

संशोधित संस्करण २०४१ वि.

दो शब्द –

आपको विदित ही है कि कोई चालीस वर्ष पूर्व समग्र गोस्वामी- कुटुम्बों के वंशवृक्षों का संकलन.........

"श्रीवल्लभ-वंशवृक्ष" नाम से 'श्रीमद्वल्लभवंज. गोस्वामिपरिषद्' द्वारा प्रकाशित हुआ था- प्रकाशन के बाद से आज तक की इस सुदीर्घ अवधि में उसमें बहुतकुछ न्यूनाधिक हुआ है.......कोई दो-चार पीढ़ियों तक का वंश- विस्तार, विभिन्न कुटुम्बों की संस्थिति, उनका समायोजन।

अत: पूर्व परम्पराओं की अविच्छिन्न धाराओं के साथ संकलित अद्यतन वंश- विस्तार के परिपूर्ण परिज्ञान के लिये उसमें उपस्थित परिवर्तन, परिवर्द्धन का समावेश होना नितान्त वांछनीय है- अपने ऐतिहह्य अस्तित्व और दैनिक उपयोग की दृष्टि से, जो गोस्वामी- समाज एवं वैष्णव- सृष्टि—दोनों ही के लिये एक उपादेय सामग्री हो।

'गोस्वामी-परिषद्' के माध्यम से, इसी विचार से, हमने 'वंशवृक्ष' के पुन: प्रकाशन की योजना निर्धारित की है। पूर्व 'वंशवृक्ष' का सम्पादन-प्रकाशन 'परिषद्' के तत्कालीन मन्त्री नि. ली. गो. श्रीव्रजभूषणलालजी म. कांकरोली (हमारे पितृचरण) ने बड़ेश्रम और मनोयोग से, ऐतिह्य सुसंगति के साथ किया था, नवसंस्करण का प्रकाशन उन्हीं के सुचिन्तित 'दृष्टिबिन्दु' के अनुरूप उसी शैली में किया जारहा है।

प्रथम संस्करण की भूमिका.........'हमारा दृष्टिबिन्दु' को अविकल सन्निविष्ट किया गया है.....................जहां जो परिवर्तन हुआ है, उसे वहीं परिशोधित, निर्दशित कर दिया गया है। अद्यतन ऐतिह्य सुसंगति बनी रहे, इस दृष्टि से। आशा है : इस प्रकार पूर्व भूमिका परिपूर्ण रूप लेकर, प्रस्तुत योजना को परिपूर्ण निष्पन्न कर रही है यह सभी के लिये सामान्यत: सुकर एवं व्यवहार्य होगी, ऐसी हमारी निष्ठा और विश्वास है।

आप सब के अपेक्षित सहयोग एवं आर्थिक अंशदान हेतु

साभार, सधन्यवाद........

भवदीय–

गो० ब्रजेशकुमार

[संशोधित संस्करण संयोजक]

मंत्री–

'श्रीमद्वल्लभवंशज, गोस्वामिपरिषद्'

(श्रीविट्ठलेशजयन्ती, २०४१ वि. कांकरोली)



महाप्रभु जगद्गुरु श्री मद्वल्लाभाचार्यजी

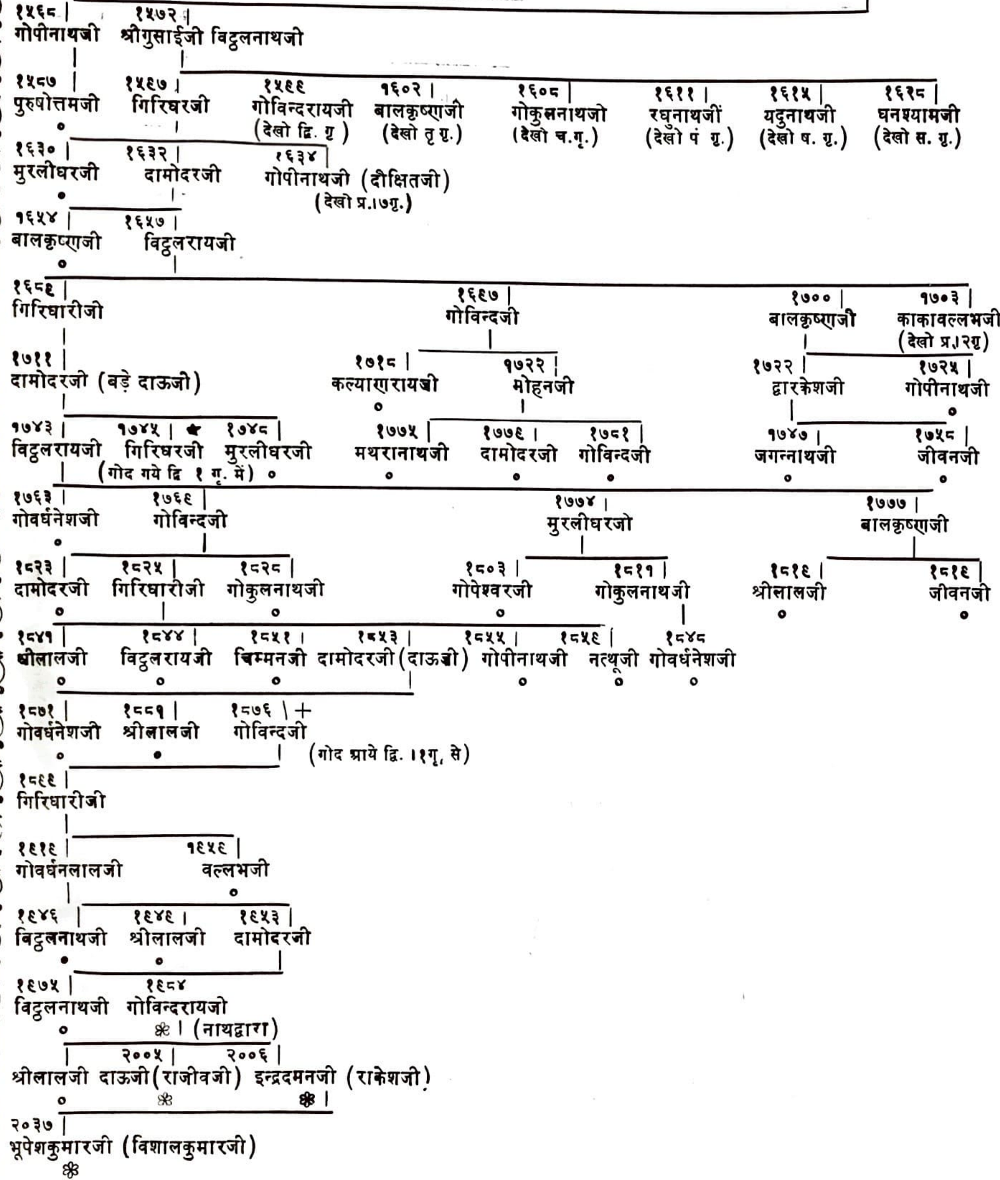
प्राकट्य सं. १५३५ वि.) □ (तिरोधान सं. १५८७ वि



प्रभुचरण गोस्वामी श्री विट्ठलनाथजी

प्राकट्य पौष कृष्णा ९ सं. १५७२ वि. □ तिरोधान सं. १६४२ वि.

प्रथम-१ गृह : नाथद्वारा (तिलकायत)



विशेष—

★ श्रीहरिरायजी (१६४७) के यहां द्वि./१ गृह में गोद गये

+ श्रीकृष्णरायजी (१८५७) के पुत्र द्वि./१ गृह से गोद आये

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

प्रथम–२ गृह : बम्बई (गोकुलाधीशजी)

१५६८ | गोपीनाथजी — १५७२ | श्रीगुसाईजी

१५८७ | पुरुषोत्तमजी ० — १५९७ | गिरिधरजी — १५९९ | गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०३ | बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ | गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ | रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ | यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) — १६२८ | घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० | मुरलीधरजी ० — १६३२ | दामोदरजी — १६३४ | गोपीनाथजी [दीक्षितजी] (देखो प्र /७ गृ)

१६५४ | बालकृष्णजी ० — १६५७ | विट्ठलरायजी

१६८९ | गिरिधारीजी (देखो प्र./१गृ.) — १६९७ | गोविन्दजी (देखो प्र./१गृ) — १७०० | बालकृष्णजी (देखो प्र./१गृ.) — १७०३ | काकावल्लभजी

१७२८ | गिरिधरजी — १७३१ | मुरलीधरजी (देखो प्र./४गृ.) — १७३३ | गोपालजी (देखो प्र /५गृ.) — १७३५ | गोवर्धनजी ० — १७३७ | गोपीनाथजी ० — १७४० | व्रजनाथजी — १७५० | गोकुलनाथजी (देखो प्र /६गृ.)

१७४७ | विट्ठलेशजी — १७५० | दानीरायजी ० — १७६३ | गोकुलचन्द्रजी ०

१७७४ | द्वारकेशजी

१८०३ | गिरिधरजी — १८२० | दामोदरजी (देखो प्र.।३गृ.) — १८२६ | वल्लभजी ०

१८२६ | विट्ठलेशजी ० — १८२८ | मथुरानाथजी | [कोटा] — १८३१ | मुरलीधरजी ०

१८५२ | द्वारकेशजी [घन्नूजी] | [जतीपुरा] — १८५५ | गिरिधरजी | [कोटा] — १८५६ विट्ठलेशजी — १८६७ | ब्रजरत्नजी [मगनजी] (देखो प्र./३ गृ.)

१८७५ | गोकुलालंकारजी | [वेरावल] — १८७९ | गोपिकालंकारजी — १८८७ | त्रिलोकीभूषणजी | [मट्टूजी] ० — १८९६ | गिरिधरजी [चट्टूजी] [गोद गये तृ.१गृ में] + — १८९८ | गोवर्धनेशजी ० — १८७६ | गोकुलाधीशजी | [बम्बई] — १८८५ | गोपिकाधीशजी ० — १८८३ | गोकुलेशजी ० — १८८७ | गोपिकेशजी

१८९२ | बालकृष्णजी ० — १८९४ | श्रीलालजी ० — १८९६ | गिरिधरजी ० — १८९७ | श्रीलालजी ० — १८९८ | श्रीलालजी ० — १८९९ | श्रीलालजी ० — १९०१ | श्रीलालजी ० — १९०३ | श्रीलालजी ० — १९५० ★ | लालमणिजी [कन्हैयालालजी] (गोद आये प्र./४गृ.से) — १९२२ | मथुरानाथजी ० — १९२४ | पुरुषोत्तमजी ० — १९०१ | श्रीलालजी ० — १९२० | ÷ गोवर्धनजी | [गोद आये प्र /३गृ.से] — १९३३ | व्रजरमणजी ० — १९३५ | व्रजशिरोमणिजी ०

१९६६ | श्रीलालजी ० — १९६९ | व्रजरत्नजी ० — १९५२ | † गोपिकावल्लभजी [मगनजी] | [गोद आये प्र ।४गृ से] [बम्बई]

१९७५ | गोकुलनाथजी — १९८२ | × मुरलीधरजी [गोद गये प्र /५गृ में]

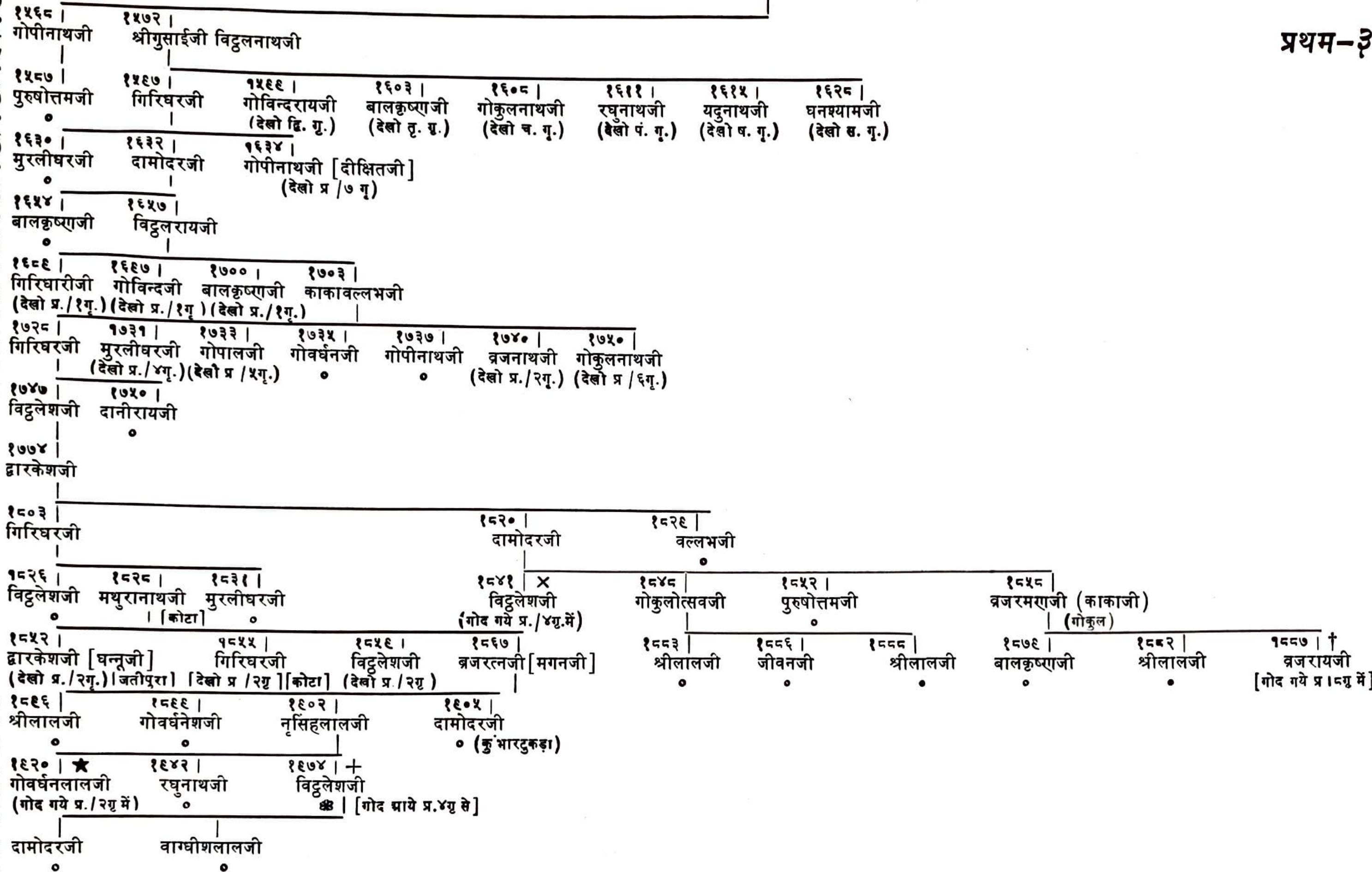
रसिकवल्लभजी ❀ — महेन्द्रकुमारजी ❀

शिशिरकुमारजी ❀

विशेष—

★ श्रीवल्लभजी (१९१५) के पुत्र, प्र० /४ गृह से गोद आये
+ श्रीपुरुषोत्तमजी (१८७६) के यहां तृ./१ गृह में गोद गये
÷ श्रीनृसिंहलालजी (१९०२) के पुत्र प्र./३ गृह से गोद आये
† श्रीमुरलीधरजी (१९१३) के पुत्र प्र./४ गृह से गोद आये
× श्रीगिरिधरजी (१८९८) के यहां प्र /५ गृह में गोद गये

प्रथम-३ गृह : बम्बई (श्रीलालजी)



विशेष—

★ श्रीगोकुलाधीशजी (१८७६) के यहां, प्र० /२ गृह में गोद गये
+ श्रीवागधीशजी (१९४१) के पुत्र, प्र./४ गृह से गोद आये
× श्रीवल्लभजी (१७८८) के यहाँ, प्र./४ गृह में गोद गये
† श्रीव्रजभूषणजी (छोटाजी) (१८३८) के यहा प्र /८ गृह में गोद गये ।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

प्रथम–४ गृह : अमरेली (बम्बई–वेट)

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ श्रीगुसाईजी विट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० — १५६७ गिरिधरजी — १५६६ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०३ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी ० — १६३२ दामोदरजी — १६३४ गोपीनाथजी [दीक्षितजी] (देखो प्र /७ गृ)

१६५४ बालकृष्णजी ० — १६५७ विट्ठलरायजी

१६८६ गिरिधारीजी (देखो प्र /१गृ.) — १६६७ गोविन्दजी (देखो प्र./१गृ) — १७०० बालकृष्णजी (देखो प्र./१गृ.) — १७०३ काकावल्लभजी

१७२८ गिरिधरजी (देखो प्र.२/गृ) — १७३१ मुरलीधरजी — १७३३ गोपालजी (देखो प्र /५गृ.) — १७३५ गोवर्धनजी ० — १७३७ गोपीनाथजी ० — १७४० व्रजनाथजी (देखो प्र./२गृ.) — १७५० गोकुलनाथजी (देखो प्र./६गृ.)

१७५२ पुरुषोत्तमजी — १७५६ रघुनाथजी — १७६१ दामोदरजी

१७८८ वल्लभजी (अमरेली) — १७८७ विट्ठलरायजी ० — १७९१ बालकृष्णजी ०

१८०६ मुरलीधरजी ० — १८४१ विट्ठलेशजी ★ [गोद आये प्र ३गृ से]

१८६० वल्लभजी ० — १८६२ व्रजजीवनजी (नत्थूजी) — १८७२ लालमणिजी (दाऊजी मंदिर) [बम्बई] — १८७५ पुरुषोत्तमजी ० — १८८४ दामोदरजी ० — १८८६ श्रीलालजी ० — १८८८ मोहनजी •

१९१३ मुरलीधरजी × (वेट) (गोद आये)

१८९१ विट्ठलेशजी

१९३० बालकृष्णजी ० — १९३२ छगनजी ० — १९३७ श्रीलालजी ० — १९४४ प्रद्युम्नजी ० — १९४६ अनिरुद्धजी + (वेट) [गोदगयेप्र /२ व प्र./१०गृ में] — गोपिकावल्लभजी (मगनजी) (गोद गये प्र /२गृ में)

१९१३ मुरलीधरजी % [गोद गये] (वेट) — १९१५ वल्लभजी — १९१७ पुरुषोत्तमजी (अमरेली) — १९२२ द्वारकानाथजी ० — १९२७ गिरधरजी •

१९४४ द्वारकेशजी (गिरिधरजी) ÷ (गोद गये प्र./७गृ में) — १९५० लालमणिजी (कन्हैयालालजी) † (गोद गये प्र. २गृ.में)

१९४१ बागधीशजी

१९५७ श्रीलालजी ० — १९६२ श्रीलालजी ० — १९७२ पुरुषोत्तमजी [बम्बई] — १९७४ विट्ठलेशजी * ❀ [गोद गये प्र./३गृ में]

व्रजजीवनजी ❀

द्वारकेशलालजी ❀ — पुरुषोत्तमजी ❀

विशेष:—

✱ श्रीदामोदरजी १८२०) के पुत्र, प्र०/३ गृह से गोद आये

× श्रीविट्ठलेशजी (१८९१) के पुत्र गोद आये

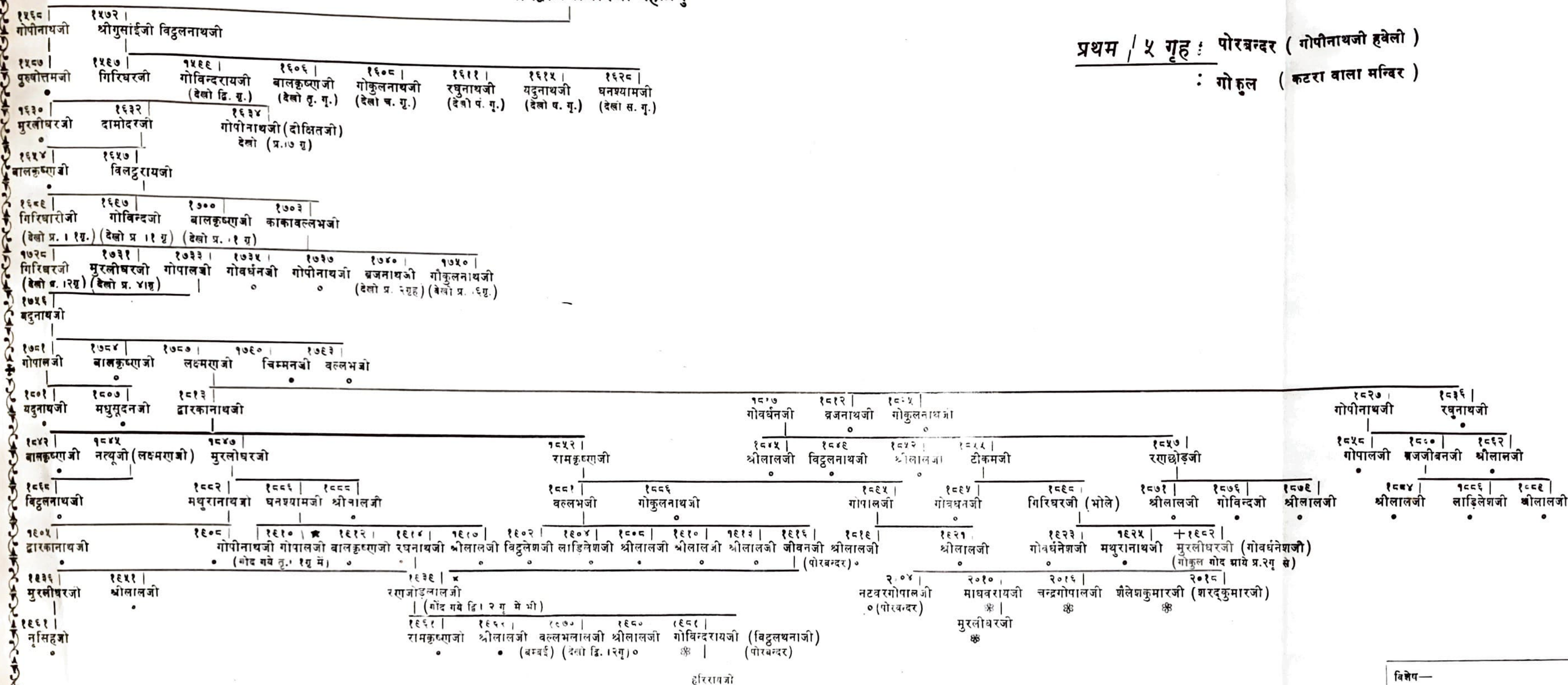
+ श्रीव्रजरत्नजी (१८९१) के यहां द्वि०/२ तथा श्रीव्रजेशजी (१९१०) के यहां प्र०/१० गृह में गोद गये।

÷ श्रीव्रजजीवनजी [१८६२] के यहां गोद गये।

% श्रीरणछोड़जी [१९०८] के यहां प्र०/७ गृह में गोद गये

† श्रीगोकुलालंकारजी (वेरावल) [१८७५] के यहां प्र०२ गृह में गोद आये।

* श्रीतृसिंहलालजी [१९०२] के यहां प्र०/३ में गोद गये।



विशेष—

★ श्रीद्वारकेशजी (बसंतरायजी) (१८७५) के यहां, तृ.।१गृह में गोद गये.

× श्रीघनश्यामजी (१९२८) के यहां, द्वि.।२ गृह में गोद गये.

+ श्रीगोपिकावल्लभजी (मगनजी) (१९५२) के पुत्र, प्र०।२ गृह से गोद आये ।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

प्रथम / ६ गृह · बम्बई (बड़ा मन्दिर)

१५६८ गोपीनाथजी | १५७२ श्रीगुसांईजी विट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी • | १५९७ गिरिधरजी | १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) | १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) | १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) | १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) | १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) | १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी ० | १६३२ दामोदरजी | १६३४ गोपीनाथजी (दीक्षितजी) देखो (प्र.१७ गृ)

१६५४ बालकृष्णजी • | १६५७ बिलट्ठरायजी

१६८६ गिरिधारीजी (देखो प्र. ११ गृ.) | १६९७ गोविन्दजी (देखो प्र ११ गृ) | १७०० बालकृष्णजी (देखो प्र. १२ गृ) | १७०३ काकावल्लभजी

१७२८ गिरिधरजी (देखो प्र. १२गृ) | १७३१ मुरलीधरजी (देखो प्र. ४गृ) | १७३३ गोपालजी (देखो प्र. १५गृ.) | १७३५ गोवर्धनजी ० | १७३७ गोपीनाथजी ० | १७४० ब्रजनाथजी (देखो प्र. २गृह) | १७५० गोकुलनाथजी

१७७१ मथुरानाथजी | १७८१ विट्ठलरायजी | १७८७ जीवनजी (गोपीनाथजी) •

१८०६ गिरिधरजी • | १८०८ मुरलीधरजी • | १८१० ब्रजनाथजी • | १८२० गोकुलनाथजी (वेरावल) | १८२५ गोवर्धनेशजी (बड़ा मन्दिर) | १८२८ बालकृष्णजी ० | १८३१ गिरिधरजी (गोकुलोत्सवजी)

१८५० पीताम्बरजी • | १८६७ मदनमोहनजी •(भट्ट जी) | १८४३ विट्ठलेशजी | १८४६ श्रीलालजी • | १८५६ जीवनजी ✱ (गोद आये) | १८५६ जीवनजी + (गोद गये)

१८६४ गिरिधरजी | १८६८ लक्ष्मणजी | १९४५ गोकुलनाथजी (गोविन्दजी) ×

१८९४ श्रीकृष्णजीवनजी (गिरिधरजी) बम्बई पधारे | १९६६ दामोदरजी • | १९७० दीक्षितजी (गोद गये प्र. ७ गृ में) | १९१२ गोपीनाथजी ❋(बम्बई) | १९८० मुकुन्दरायजी (बम्बई) ❋ | १९८३ कल्याणरायजी (बम्बई) | १९९१ मधुरेशजी (बम्बई) ❋ | १९९० माधवरायजी (बम्बई) ❋

१९८० कृष्णचन्द्रजी (बम्बई मद्रास) | १९८२ गोवर्धनेशजी • | १९८४ जीवनेशजी (बम्बई) ❋ | १९८५ हरिरायजी (बम्बई) ❋ | १९८७ व्रजाधीशजी (बम्बई) ❋ | १९८९ द्वारकानाथजी ❋ | १९९१ श्यामसुन्दरजी (पूना) ❋ | १९९३ नृत्यगोपालजी (बम्बई) ❋ | २००७ रमेशचन्द्रजी ❋ | राजेन्द्रकुमारजी ❋ | नीरजकुमारजी ❋

२००३ मधुसूदनजी ❋ | मुरलीमनोहरजी ❋ | कृष्णकान्तजी ❋ | गिरिधरगोपालजी ❋ | २००५ पुरुषोत्तमजी ❋ | २०१२ ललितत्रिभंगीजी ❋ | हृषीकेशजी ❋ | मदनमोहनजी ❋ | यदुरायजी ❋ | कमलेशजी ❋ | अजयकुमारजी ❋ | भरतकुमारजी ❋ | मनमोहनजी ❋ | हिरण्यगर्भजी ❋ | रघुनाथजी ❋ | यदुनाथजी ❋ | गोकुलनाथजी ❋ | गोविन्दरायजी ❋

कृष्णजीवनजी ❋ | वल्लभदीक्षितजी ❋ | गोपिकालंकारजी ❋ | गिरिधारीलालजी ❋ | २०३६ गोकुलनाथजी ❋ | २०४० चित्तेशजी ❋ | २०३६ व्रजवल्लभजी ❋ | राजीवलोचनजी ❋ | बालकृष्णजी ❋

विशेष—

✱ श्रीगिरिधरजी (१८३१) के पुत्र, गोद आये।

× श्रीदामोदरजी (१९१२) के पुत्र प्र. १९ गृह से गोद आये।

❋ श्रीजीवनजी (१९३७) के यहां, प्र०१७ गृह में गोद गये।

+ श्रीगोवर्धनेशजी (१८२५) के यहां गोद गये।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

प्रथम–७ गृह : कोटा (मथुरेशजी)

: कृष्णगढ़

१५६८ | गोपीनाथजी — १५७२ | श्रीगुसांईजी विट्ठलनाथजी

१५८७ | पुरुषोत्तमजी •

१५९७ | गिरिधरजी — १५९९ | गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०३ | बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ) — १६०८ | गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ | रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) — १६१५ | यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) — १६२८ | घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० | मुरलीधरजी • — १६३२ | दामोदरजी (देखो प्र १/ गृ) — १६३४ | गोपीनाथजी [दीक्षितजी]

१६६० | वल्लभजी (प्रभुजी) — १६६२ | मथुरामल्लजी (देखो प्र./८गृ.) — १६७३ | गोविंदजी (देखो प्र./९गृ) — १६७५ | रामकृष्णजी (देखो प्र./११गृ.)

१६७७ | रणछोड़जी — १६७९ | मोहनजी •

१७२५ | गिरिधरजी — १७२७ | रघुनाथजी — १७२९ | व्रजजीवनजी | (बूंदी)

१७४५ | गोपीनाथजी — १७५५ | गोपालजी — १७६० | वत्साजी •

१७४४ | व्रजनाथजी — १७५६ | व्रजभूषणजी — १७५८ | व्रजरायजी ● (गोद गये प्र./८गृ. में)

१७८९ | मधुसूदनजी • — १७९१ | विट्ठलनाथजी

१७७१ | वल्लभजी (प्रभुजी) — १७७४ | मथुरामल्लजी [नथमलजी]

१७९० | गोवर्धनजी — १८०० | घनश्यामजी — १८०३ | गोपेश्वरजी •

१७८० | गोकुलचन्द्रजी — १७९७ | व्रजनाथजी

१८२७ | दामोदरजी (खंभालिया) — १८४१ | वल्लभजी

१७९२ | गिरिधरजी • — १७९७ | गोविन्दजी — १८०० | गोकुलनाथजी •

१७९७ | द्वारकानाथजी — १७९९ | गोकुलनाथजी — १८०४ | अनिरुद्धजी

१८४४ | वत्साजी • — १८४४ | गोपालजी

१८३५ | पीताम्बरजी • — १८२८ | गोकुलचन्द्रजी

१८४६ | व्रजनाथजी • — १८६१ | मोहनजी • — १८७८ | ÷ कन्हैयालालजी [गोद गये]

१८३७ | गोपीनाथजी • — १८४० | गोपोत्सवजी • — १८५५ | गोपेश्वरजी • — १८४५ | प्रभुजी ✱ गोद गये

१८४७ | मुरलीधरजी • — १८१७ | विट्ठलरायजी — १८२६ | माधवरायजी — १८२५ | कल्याणरायजी •

१८६० | गोवर्धनजी • — १८६३ | गिरिधरजी • — १८६७ | घनश्यामजी • — १८७१ | पुरुषोत्तमजी •

१८५३ | पीताम्बरजी •

१८७८ | + कन्हैयालालजी [विट्ठलनाथजी] (गोद आये)

१८४५ | × प्रभुजी [गोद गये] — १८६६ | मथुरानाथजी • — १८७२ | कल्याणरायजी •

१९०८ | रणछोड़लालजी — १९१२ | गिरिधरजी •

१९३७ | जीवनलालजी — १९४० | श्रीलालजी • (जोड़ला) — १९४० | श्रीलालजी • — १९४४ | † द्वारकेशजी (गिरिधरजी) (गोद आये प्र./४ गृ. से)

१९७० | * दीक्षितजी [गोदआयेप्र./६गृ से] (किशनगढ़)

१९८३ | श्रीलालजी • — १९८९ | रणछोड़जी (❁ कोटा)

२००० | उत्तमश्लोकजी ❁ — श्याममनोहरजी ❁

लालमणिजी

गिरिधरजी ❁ — अनिरुद्धलालजी ❁



विशेष:—

✱ श्रीविट्ठलरायजी (१८१७) के पुत्र, गोद आये।

+ श्रीवल्लभजी (१८४१) के पुत्र गोद आये

* श्रीगोकुलनाथजी (१९४५) के पुत्र प्र०/६ गृह से गोद आये।

† श्रीवल्लभजी [१९१५] के पुत्र, प्र०/४ से गोद आये।

× श्रीगोविन्दजी [१७९७] के यहां गोद गये।

● श्रीबालकृष्णजी [१७२५] के यहां प्र०/८ गृह में गोद गये

÷ श्रीप्रभुजी [१८४५] के यहां गोद गये।

प्रथम–८ गृह : अहमदाबाद

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

१५६८ गोपीनाथजी | १५७२ श्रीगुसाईजी विट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी • | १५९७ गिरिधरजी | १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) | १६०३ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ) | १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ) | १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) | १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) | १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी • | १६३२ दामोदरजी (देखो प्र १/ गृ) | १६३४ गोपीनाथजी [दीक्षितजी]

१६६० वल्लभजी (प्रभुजी) (देखो प्र./७गृ.) | १६६२ मथुरामल्लजी | १६७३ गोविंदजी (देखो प्र./९गृ) | १६७५ रामकृष्णजी (देखो प्र/११गृ.)

१६८० रघुनाथजी • | १६८२ गिरिधरजी [गोवर्धनेशजी] ० | १६८५ गोपालजी • | १६८८ पुरुषोत्तमजी (नटवरगोपालजी)

१७२५ बालकृष्णजी

१७५८ ब्रजरायजी ★ (गोद आये प्र./७गृ. से)

१८०० रघुनाथजी

१८३१ गोपीनाथजी | १८३४ श्रीलालजी ० | १८३८ ब्रजभूषणजी (छोटाजी) | १८४६ पीताम्बरजी •

१८५५ ब्रजनाथजी • | १८५७ गोपालजी · | १८५९ उपेन्द्रजी ० | १८५९ ब्रजनाथजी ० | १८८७ ब्रजरायजी + (गोद आये प्र./३ गृ से)

१९११ बालकृष्णजी | १९१३ रघुनाथजी ० | १९१५ पन्नालालजी • | १९२६ मधुसूदनजी × [गोद आये प्र/३ गृ. से]

१९३० गोपीनाथजी | १९४० रामचन्द्रजी ० | १९४९ रणछोड़लालजी (अहमदाबाद) | १९७३ गोपीनाथजी •

१९७७ छोटाजी ० | १९८७ ब्रजरायजी (नटवरगोपालजी)

ब्रजेन्द्रकुमारजी

मधुसूदनलालजी

विशेष:—

★ श्रीरघुनाथजी १७२७) के पुत्र, प्र०/७ गृह से गोद आये

+ श्रीव्रजरमणजी-काकाजी (१८५८) के पुत्र प्र०/३ गृह से गोद आये।

× श्रीव्रजनाथजी (१९०३) के पुत्र ष०/२ गृह से गोद आये

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

प्रथम–९ गृह : चापासेनी
: माण्डवी

१५६८ गोपीनाथजी | १५७२ श्रीगुसाईजी विट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी • | १५९७ गिरिधरजी | १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) | १६०३ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ) | १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) | १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) | १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) | १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० मुरलीधरजी • | १६३२ दामोदरजी (देखो प्र १/ गृ) | १६३४ गोपीनाथजी [दीक्षितजी]

१६६० वल्लभजी (प्रभुजी) (देखो प्र./७गृ.) | १६६२ मथुरामल्लजी (देखो प्र./८गृ.) | १६७३ गोविंदजी | १६७५ रामकृष्णजी (देखो प्र./११गृ.)

१६९९ मुरलीधरजी | १७०२ बंसीधरजी • | १७११ बाबूरायजी (गोपालजी) (देखो प्र/१० गृ.) | १७१२ विट्ठलनाथजी •

१७१७ गोपीनाथजी | १७२० दामोदरजी (चापासेनी) | १७२८ मथुरानाथजी (माडवी) | १७३५ द्वारकानाथजी (मांडवी)

१७३६ गोकुलोत्सवजी | १७५० लक्ष्मीनृसिंहजी | १७४९ उत्साजी • | १७५१ विट्ठलरायजी | १७६० मुरलीधरजी | १७६५ व्रजभूषणजी • | १७६८ व्रजरायजी | १७७४ रणछोड़जी • | १७७७ चिम्मनजी (गिरिधरजी)

१७६६ गोविंदजी | १७६९ गोपेन्द्रजी • | १७७० नत्थूजी • | १७८७ बालकृष्णजी • | १७८८ गोपीनाथजी | १७८७ दामोदरजी | १८०१ दामोदरजी • | १७९९ द्वारकानाथजी • | १८०३ जगन्नाथजी | १८०५ गोपालोत्सवजी | १८०७ व्रजवल्लभजी | १८०८ गोकुलनाथजी • | १८११ व्रजनाथजी (गोपीनाथजी) •

१७९८ मुरलीधरजी | १८०३ श्रीलालजी • | १८०८ गोकुलेशजी • | १८२६ विट्ठलेशरायजी | १८२९ मुरलीधरजी • | १८३२ व्रजोत्सवजी • | १८२८ रणछोड़जी | १८३१ गोपीनाथजी • | १८३५ गिरिधरजी • | १८५५ गिरिधरजी •

१८३२ गोकुलोत्सवजी • | १८३४ गोकुलालंकारजी • | १८३७ गोविंदजी • | १८५० बालकृष्णजी • | १८५२ गोपीनाथजी | १८७३ श्रीनृसिंहजी • | १८४६ द्वारकानाथजी • | १८४८ वत्साजी • | १८५० श्रीकृष्णजी (छोटाजी)

१८७७ बालकृष्णजी • | १८७६ दामोदरजी • | १८८१ कृष्णजीवनजी (कुंजलालजी) | १८८४ मथुरानायजी • | १८८७ श्रीलालजी • | १८८१ दामोदरजी • | १८८९ गिरिधरजी • | १९०६ श्रीलालजी • | १९०३ × मथुरानाथजी [पन्नालालजी] (गोद आये)

१९०३ ★ मथुरानाथजी [पन्नालालजी] (गोद गये) | १९०७ मुरलीधरजी | १९१२ दामोदरजी | १९१४ गोकुलनाथजी • | १९१९ विट्ठलेशजी | १९२२ † घनश्यामजी (गोद गये) | १९२५ व्रजरत्नजी • | १९२२ △ घनश्यामजी (गोद आये)

१९४७ * व्रजवल्लभजी (बालकृष्णजी) (गोद गये प्र./१०गृ. में) | १९५२ रघुनाथजी | १९३२ नृसिंहजी • | १९३४ यदुनाथजी • | १९३६ रणछोड़जी • | १९४५ + गोकुलनाथजी (गोविंदजी) (गोद गये प्र/६ गृ में) | १९६१ ÷ द्वारकेशजी (गोद गये) | १९६३ श्रीलालजी • | १९६६ व्रजनाथजी (बम्बई) | १९६१ ∟ द्वारकेशजी

१९७३ ≠ पुरुषोत्तमजी [गोदगये प्र./१०गृ.में] | १९७६ § व्रजभूषणजी [गोद गये प्र./१० तथा द्वि./२ गृ में भी] (चापासेनी) ❈ | मुरलीधरजी (बोरीवली) | वल्लभलालजी (राजकोट) ❈ | दानीरायजी ❈ | राकेशकुमारजी ❈ | १९८० दामोदरजी ❈ (माण्डवी) | १९८५ नटवरजी • | १९९० अनिरुद्धजी ❈ | १९९३ चिम्मनजी ❈ | १९९४ किशोरचन्द्रजी ❈ | विट्ठलरायजी ❈ | मुरलीमनोहरजी ❈

त्रिभंगीलालजी ❈ | व्रजप्रियजी ❈ | यशोदानन्दनजी ❈ | राजीवलोचनजी ❈ | गोविंदलालजी ❈ | गोपिकालंकारजी ❈ | गोकुलेशजी ❈ | पुरुषोत्तमजी ❈ | व्रजेन्द्रकुमारजी ❈ | रणछोड़लालजी ❈ | रसिकरायजी ❈ | चन्द्रगोपालजी ❈ | भूषणजी ❈ | व्रजेन्द्रजी ❈ | व्रजवल्लभजी ❈

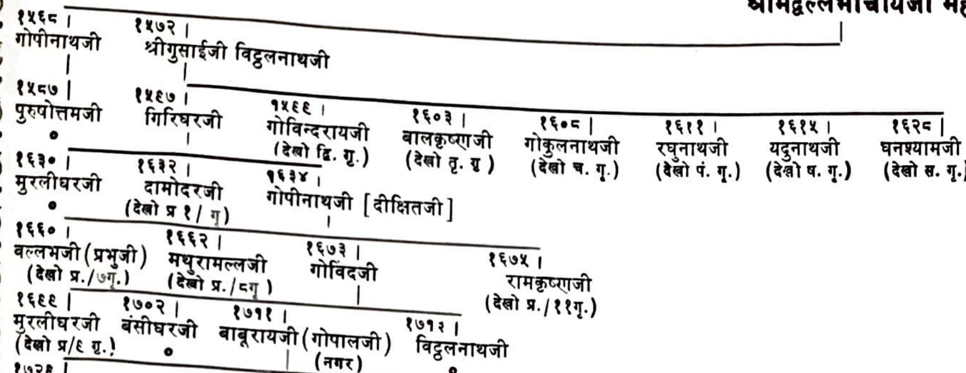
यमुनेशजी ❈ | देवकीनन्दनजी ❈ | कुंजरायजी ❈

विशेष—

- ★ श्रीकृष्णजी [छोटाजी] (१८५०) के यहां गोद गये
- * श्रीगोकुलेशजी (१९०६) के यहां प्र/१० गृ. में गोद गये
- ≠ श्रीव्रजवल्लभजी (१९४७) के यहां प्र./१० गृ. में गोद गये
- § श्रीअनिरुद्धजी [१९४६] के यहां प्र./१० गृ. तथा द्वि./२गृ. में गोद गये।
- + श्रीजीवनजी [१७५६] के यहां प्र./६ गृ में गोद गये
- † श्रीमथुरानाथजी (पन्नालालजी) [१९३०] के यहां गोद गये
- ÷ श्रीघनश्यामजी [१९२२] के यहां गोद गये।
- × श्रीकृष्णजीवनजी [१७७१] के पुत्र गोद आये
- △ श्रीकृष्णजीवनजी [१७७१] के पुत्र गोद आये
- ∟ श्रीविट्ठलेशजी [१९१९] के पुत्र गोद आये

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

प्रथम/१० गृह : जामनगर
: जूनागढ़
: पोरबंदर (द्वारकानाथजी की हवेली)



विशेष—

- ★ श्रीबालकृष्णजी (१७८७) के पुत्र गोद आये
- × श्रीबाबूरायजी (१८५२) के पुत्र गोद आये
- △ श्रीद्वारकानाथजी (१८८६) के पुत्र गोद आये
- + श्रीमुरलीधरजी [१९१३] के पुत्र प्र./४ गृ. से गोद आये
- * श्रीरघुनाथजी [१९५२] के पुत्र प्र./६ गृ. से गोद आये तथा श्रीअनिरुद्धजी [१९४६] के यहां द्वि./२गृ में गोद भी गये
- ∟ श्रीबालकृष्णजी [१७८७] के पुत्र गोद आये
- § श्रीरणछोड़जी [१७७८] के यहां गोद गये।
- ≠ श्रीबंशीधरजी [१८४०] के यहां गोद गये
- ÷ श्रीव्रजवल्लभजी [मगनजी] के पुत्र गोद आये
- ● श्रीमुरलीधरजी [१६०७] के पुत्र प्र./६ गृ. से गोद आये
- T श्रीरघुनाथजी [१६५२] के पुत्र प्र./६ गृ से गोद आये
- X श्रीगिरिधरजी [नत्थूजी] (१७६४) के यहां गोद आये
- P श्रीमाधवरायजी [१७६६] के यहां गोद गये
- N श्रीवल्लभजी [१८६१] के पुत्र ष. गृ. से गोद आये
- Z श्रीविट्ठलेशजी [१८२०] के पुत्र गोद आये
- & श्रीबाबूरायजी [१८५२] के यहां गोद गये
- W श्रीव्रजनाथजी [१८७३] के यहां गोद गये
- V श्रीरमणलालजी [१६०४] के पुत्र ष./२गृ. से गोद आये
- † श्रीव्रजपालजी [१९२३] के यहां ष/२ गृ. में गोद गये

१७२१ | गोवर्धनेशजी

१७४५ | हन्नूजी (गोकुलाधीशजी)

१७५६ | वल्लभजी — १७६० | अनिरुद्धजी — १७६३ | बंसीधरजी

१७७० | रामकृष्णजी — १७७४ | लक्ष्मणजी — १७७८ | रणछोड़जी (घींगड़मलजी) [पोरबन्दर] — १७८४ | टीकमजी

१७६२ | गोवर्धनेशजी — १७६४ | गिरिधरजी (नत्थूजी) — १७६६ | माधवरायजी P — १७८९ | गोकुलचन्दजी [जूनागढ़] — १७९१ | रणछोड़जी — १७९४ | कल्याणरायजी — १७८७ | बालकृष्णजी

१७८६ | राजीवलोचनजी — १७९१ | श्रीलालजी — १८१६ | Z व्रजवल्लभजी (मगनजी) [गोद आये]

१८१३ | ★ गोवर्धनेशजी (गोद आये)

१८२० | पुरुषोत्तमजी — १८२० | विट्ठलेशजी — ∟ १८१३ | गोवर्धनेशजी (गोद आये) — X १८१८ | गोकुलेशजी (गोद गये) — १८२० | विट्ठलेशजी (गोद गये) — P १८३१ | बंसीधरजी

१८१७ | जगन्नाथजी — १८१९ | यशोदानन्दनजी — १८२१ | व्रजरत्नजी — १८२६ | द्वारकानाथजी

१८७७ | श्यामलजी — १८७६ | व्रजमोहनजी — १८८२ | व्रजरमणजी — १८८५ | & गोविंदजी (वच्छाजी) (गोद गये) — १८८६ | द्वारकानाथजी — १८९२ | मथुरानाथजी

१८४० | बंसीधरजी — १८४२ | मधुसूदनजी — १८४५ | मथुरानाथजी — १८५२ | बाबूरायजी — १८५६ | § व्रजवल्लभजी (मगनजी) [गोद गये] — १८५९ | जगन्नाथजी — १८६२ | व्रजपालजी — १८६५ | व्रजरमणजी — १८६७ | श्रीलालजी

१८५० | पुरुषोत्तमजी — १८०२ | N गोकुलनाथजी [गोद आये ष. गृ से]

१९०८ | विट्ठलेशजी — १९१० | W व्रजेशजी (गोद गये) — १९१३ | बालकृष्णजी

१८७३ | × व्रजनाथजी [गोद आये]

१८७३ | ≠ व्रजनाथजी (गोद गये) — १८७५ | कल्याणरायजी — १८८५ | ÷ गोविंदजी (वच्छाजी) (गोद आये)

१९३२ | V घनश्यामजी (पोरबन्दर) | (गोद आये ष./२ गृ. से)

१९१० | △ व्रजेशजी | (गोद आये)

१९०२ | श्रीलालजी — १९०६ | गोकुलेशजी

१९४६ | † दामोदरलालजी (गोद गये ष./२ गृ में) — १९५६ | द्वारकेशलालजी

१९४६ | + अनिरुद्धजी | (गोद आये प्र /४गृ. से)

१९३२ | श्रीलालजी — १९४७ | ● व्रजवल्लभजी (बालकृष्णजी) | (गोद आये प्र./६ गृ. से)

लालमणिजी — देवकीनन्दनजी — माधवरायजी — रसिकरायजी ❀

१९७६ | * व्रजभूषणजी (जामनगर) | ❀[गोद आये प्र./६ गृ. से तथा गोद गये द्वि /२ गृ. में भी]

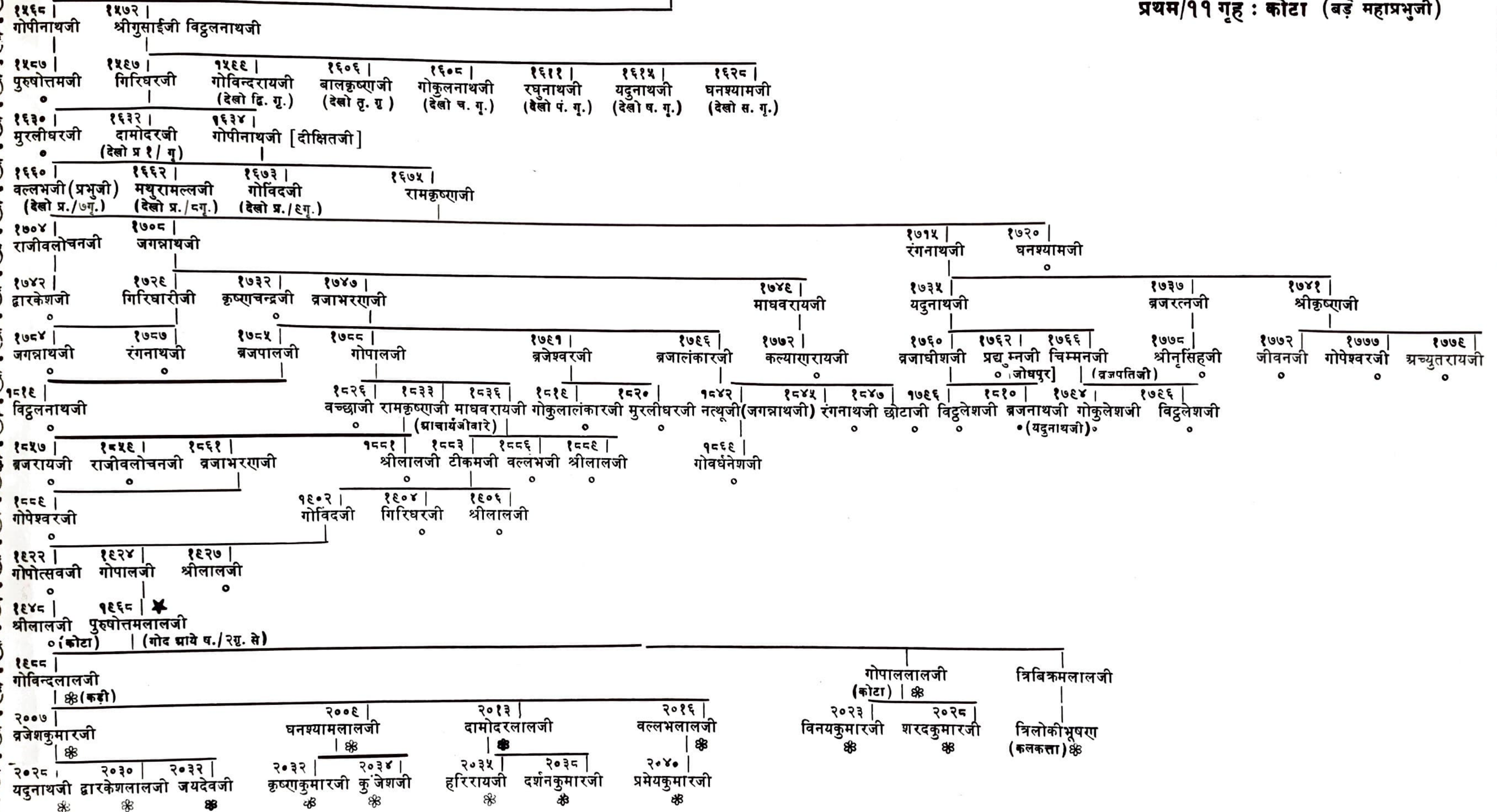
१९७३ | T पुरुषोत्तमजी (गोद आये प्र./६ गृ से) (जूनागढ़)

२०१५ | मधुरेशकुमारजी ❀ — २०१७ | कन्हैयालालजी ❀ — २०१९ | श्यामसुन्दरजी ❀ — २०१८ | चन्द्रगोपालजी ❀ — २०२८ | शरदकुमारजी ❀

२००४ | विट्ठलनाथजी ❀ — २००७ | हरिरायजी ❀ — २००९ | व्रजरत्नजी ❀ — २०१३ | श्याममनोहरजी ❀ — २०१६ | नवनीतजी ❀ — २०२० | बालकृष्णजी ❀

२०३६ | वसन्तकुमारजी ❀ — २०३८ | विशालकुमारजी ❀ — २०३९ | अभिषेक बाबा ❀

२०२७ | रसिकरायजी ❀ — २०३४ | मुकुटरायजी ❀ — २०३८ | शरदकुमारजी ❀ — २०४० | व्रजोत्सवजी ❀ — २०३३ | वल्लभलालजी ❀ — २०३४ | गोकुलोत्सवजी ❀



विशेष:—

★ श्रीदामोदरजी (१६४६) के पुत्र ष./२ गृह से गोद आये।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

द्वितीय/१ गृह : नाथद्वारा (श्री विट्ठलनाथजी)
: इन्दौर

१५६८ गोपीनाथजी | १५७२ श्रीगुसाईजी विट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ० | १५९७ गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.) | १५९९ गोविन्दरायजी | १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) | १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) | १६११ रघुनाथजी (देखो पं. गृ.) | १६१५ यदुनाथजी (देखो ष. गृ.) | १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६२५ कल्याणरायजी | १६३४ गोकुलोत्सवजी ० | १६३७ कृष्णरायजी | १६४१ लक्ष्मीनृसिंहजी

१६४७ हरिरायजी | १६४६ गोपेश्वरजी | १६५१ विट्ठलेशजी ० | १६५९ गोवर्धनजी ० | १६६१ कल्याणरायजी ० | १६६३ गोकुलालंकारजी | १६६६ माधवरायजी | १६७० लालमणिजी | १६७३ अच्युतरायजी ० | गोकुलेन्द्रजी

१६७५ गोविन्दजी ० | १६७९ विट्ठलरायजी ० | १६८१ गोराजी ० | १६८२ छोटाजी ० | १७४५ गिरिधरजी★ (गोद आये प्र/१गृ. से) | १६७४ यशोदानन्दनजी ० | १६८५ व्रजेश्वरजी | १६८७ हरिजी ० | १६८७ कृष्णरायजी ० | १७०५ व्रजानन्दजी ०

१७६२ रघुनाथजी | १७६६ चिम्मनजी | १७७१ कल्याणरायजी | १७७४ घनश्यामजी (देखो द्वि/२ गृ) | १७७७ गोपीनाथजी ० | १७०७ गोकुलालंकारजी | १७०९ हरिरायजी

१७८५ गोविंदरायजी | १७८७ वल्लभजी ० | १७९२ नत्थूजी ० | १७९४ जगन्नाथजी ० | १७८५ गोकुलनाथजी ० | १७८७ विट्ठलनाथजी | १७९१ ब्रजनाथजी | १७९५ हरिरायजी | १७९९ वत्साजी ० | १८२४ दामोदरजी | १८२७ मोहनजी ० | १८३० लल्लूजी ०

१८०८ गिरिधारीजी ० | १८११ विट्ठलेशरायजी | १८१६ गोकुलोत्सवजी ∟ (गोद गये तृ./२ गृ. में) | १८१४ गिरिधरजी ० | १८१३ द्वारकानाथजी | १८२५ बालकृष्णजी | १८२८ लक्ष्मणजी ० | १८२० नत्थूजी ० | १८५३ यदुनाथजी ०

१८६२ नत्थूजी ० | १८६५ बालकृष्णजी (दामोदरजी) ० | १८६८ लक्ष्मणजी ० | १८३५ गोपेश्वरजी × (गोद आये तृ./२गृ से) | १८३८ गोवर्धनेशजी ० | १८४७ गोकुलनाथजी ० | १८५१ ब्रजाभरणजी ० | १८५४ ब्रजपालजी

१८५७ कृष्णरायजी | १८७९ बालकृष्णजी ० | १९१५ द्वारकानाथजी (व्रजनाथजी) ०

१८७६ ≠ गोविन्दजी (गोद गये प्र./१गृ में) | १८७८ गोकुलोत्सवजी ० | १८७९ विट्ठलरायजी | १८८७ काकागिरिधरजी | १८९१ छोटाजी (दामोदरजी) ०

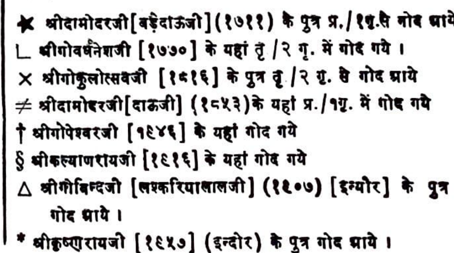
१८९७ रघुनाथजी (पन्नालालजी) | १९०७ गोविन्दजी (लश्करियालालजी) (इन्दौर) | १९१६ कल्याणरायजी

१९२४ विट्ठलनाथजी ० | १९२८ नृसिंहजी ० | १९३८ देवकीनन्दनजी | १९४६ § गोपेश्वरजी (गोद गये) | १९४६ △ गोपेश्वरजी (गोद आये)

१९५७ कृष्णरायजी ० (इन्दौर) | १९८१ * गिरिधरजी ० (गोद आये) (नाथद्वारा)

१९८१ † गिरिधरजी ० (गोद गये) | विट्ठलेशरायजी ❁ | २०१० कल्याणरायजी ❁ | २०११ गोकुलोत्सवजी ❁ | २०१४ देवकीनन्दनजी ❁

२०३६ हरिरायजी (मुरलीधरजी) ❁ | २०३९ वागधीशजी ❁ | २०३६ व्रजोत्सवजी (अभिजीताचार्यजी) ❁



विशेष:—

★ श्रीदामोदरजी [बड़ेदाऊजी] (१७११) के पुत्र प्र./१गृ.से गोद आये

∟ श्रीगोवर्धनेशजी [१७७०] के यहां तृ /२ गृ. में गोद गये।

× श्रीगोकुलोत्सवजी [१८१६] के पुत्र तृ /२ गृ. से गोद आये

≠ श्रीदामोदरजी [दाऊजी] (१८५३) के यहां प्र./१गृ. में गोद गये

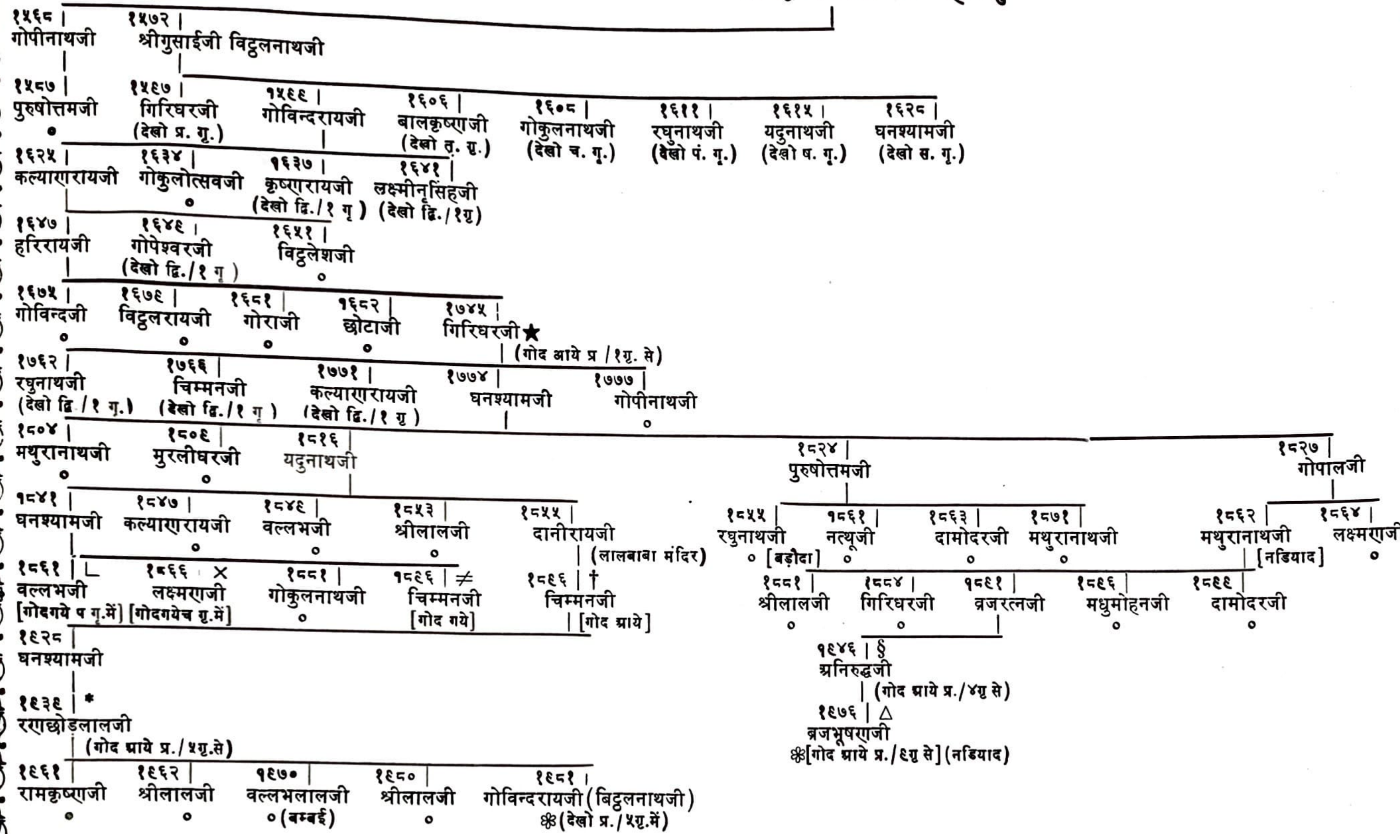
† श्रीगोपेश्वरजी [१९४६] के यहां गोद गये

§ श्रीकल्याणरायजी [१९१६] के यहां गोद गये

△ श्रीगोविन्दजी [लश्करियालालजी] (१९०७) [इन्दौर] के पुत्र गोद आये।

* श्रीकृष्णरायजी [१९५७] (इन्दौर) के पुत्र गोद आये।

द्वितीय/२ गृह : बम्बई (लालबाबा)
: नडियाद



विशेष:—

★ श्रीदामोदरजी[बड़ेदाऊजी](१७११) के पुत्र प्र./१गृ.से गोद आये
∟ श्रीदेवकीनन्दनजी(जयपुर)[१७९९] के यहां प. गृ. में गोद गये
× श्रीव्रजपतिजी [१९९३] के यहां च.गृ. में गोद गये
≠ श्रीदानीरायजी (१८५५)के यहां गोद गये ।
† श्रीघनश्यामजी [१८४१] के पुत्र गोद आये
* श्रीजीवनजी [१९१६] पोरबन्दर के पुत्र प्र./५गृ. से गोद आये
§ श्रीमुरलीधरजी [वेट] के पुत्र प्र./४ गृ. से गोद आये ।
△ श्रीरघुनाथजी [१९५२] के पुत्र प्र./६ गृ. गोद आये ।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

तृतीय/१ गृह : कांकरोली [श्रीद्वारकाधीश]

[छोटामंदिर]

१५६८ | गोपीनाथजी   १५७२ | श्रीगुसाईजी विट्ठलनाथजी

१५८७ | पुरुषोत्तमजी ०   १५९७ | गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.)   १५९९ | गोविन्दरायजी (देखो द्वि गृ.)   १६०६ | बालकृष्णजी   १६०८ | गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.)   १६११ | रघुनाथजी (देखो पं. गृ.)   १६१५ | यदुनाथजी (देखो ष. गृ.)   १६२८ | घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३० | द्वारकेशजी   १६३२ | व्रजनाथजी   १६३६ | व्रजभूषणजी   १६३९ | पीताम्बरजी (देखो तृ./२ गृ)   १६४१ | व्रजालंकारजी   १६४४ | पुरुषोत्तमजी

१६५८ | अनिरुद्धजी ०   १६६२ | गिरिधरजी   १६५६ | कृष्णचन्द्रजी ०   १६५६ | गोपालजी   श्रीलालजी ०   १६८१ | विट्ठलेशजी   १६८४ | गोकुलेशजी ०   १६९० | बालकृष्णजी ०

१६८२ | द्वारकानाथजी ०   १७०० | ★ व्रजभूषणजी (गोद आये)   १६७१ | वल्लभजी   १७१३ | वल्लभजी   १७१५ | रणछोड़जी (बुरहानपुर)   १७१८ | मुरलीधरजी   १७२९ | व्रजालंकारजी

१७४५ | गिरिधरजी   १७४८ | द्वारकानाथजी ०   १७०० | + व्रजभूषणजी (गोद गये)   १७२५ | गोपालजी ०   १७२१ | बालकृष्णजी   १७४२ | वेंकटेशजी   १७४६ | तिरुमल्लजी ०   १७४८ | माधवरायजी ०   १७४७ | अनिरुद्धजी   १७४९ | वल्लभजी ०   १७३८ | ÷ पुरुषोत्तमजी (गोदगये तृ./२गृ.में)   १७४९ | पीताम्बरजी ०   १७५२ | व्रजजीवनजी ०   १७५५ | व्रजवल्लभजी   १७५९ | व्रजानन्दजी ०   १७६२ | व्रजसुन्दरजी •

१७६५ | व्रजभूषणजी   १७६८ | बालकृष्णजी ०   १७८१ | वल्लभजी   १७४७ | द्वारकानाथजी ०   १७५९ | जगन्नाथजी •   १७७० | श्रीलालजी ०   १७८३ | गोकुलचन्द्रजी   १७८२ | गोकुलाधीशजी •

१७८८ | व्रजनाथजी   १७९१ | मुरलीधरजी ०   १८२७ | गोपालजी   १८०० | गोकुलनाथजी (लल्लुजी) (सूरत)

१८११ | विट्ठलनाथजी   १८१५ | कल्याणरायजी •   १८२१ | गोकुलनाथजी   १८४३ | वल्लभजी   १८४९ | व्रजवल्लभजी   १८६० | × व्रजपालजी (गोद गये स. गृ. में)   १८२९ | गिरिधरजी •

१८३५ | व्रजभूषणजी   १८४८ | गोवर्धनजी •   १८४७ | § पुरुषोत्तमजी (गोद गये)   १८४९ | पीताम्बरजी •   १८७५ | द्वारकेशजी (बसन्तरायजी)   १८८६ | पुरुषोत्तमजी ०   १८८९ | लालमणिजी ०

१८५४ | गिरिधरजी ०   १८५७ | गोपीनाथजी ०   १८७६ | श्रीलालजी ०   १८४७ | ∟ पुरुषोत्तमजी (गोद आये)   १९१० | † गोपालजी (गोदआये प्र/५गृ से)

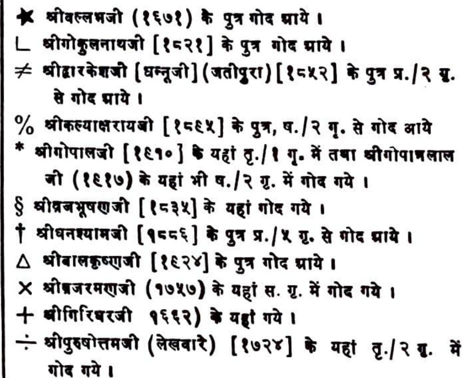
१९०८ | ≠ गिरिधरजी (यशोदानन्दनजी-चट्टूजी) (गोद आये प्र./२गृ.से)   १९३३ | वल्लभजी ०   १९७० | △ विट्ठलनाथजी ❀ (गोद आये) (कांकरोली)

१९२४ | % बालकृष्णजी (गोदआयेष./२गृ.से) ०   प्रद्युम्नजी   १९८८ | यदुनाथजी ❀ (मथुरा) (देखो ष./२गृ.)   वेंकटेशजी ०   १९९४ | कृष्णकुमारजी (कांकरोली) ❀   १९९७ | अक्षयकुमारजी ष./३गृ. में ❀ (काशी)   २००२ | राजेन्द्रकुमारजी ❀

१९४६ | द्वारकेशजी ०   १९६६ | पुरुषोत्तमजी ०   १९६८ | व्रजभूषणजी ०   १९७० | * विट्ठलनाथजी (कांकरोली) ❀ (गोदगये तृ./१ और ष./२गृ.मेंभी) ०   २०१५ | प्रदीपकुमारजी   २०१९ | संदीपकुमारजी ❀   संजयकुमारजी ❀   रविकुमारजी ❀

गिरिधरगोपालजी ०   १९९६ | व्रजेशकुमारजी ❀   २००६ | परागकुमारजी (पीताम्बरजी) ❀   २००९ | शिशिरकुमारजी (त्रिलोकीभूषणजी) ❀

२०२२ | वागीशकुमारजी (पुरुषोत्तमजी) ❀   २०२४ | द्वारकेशजी ❀   २०३० | व्रजालंकारजी (नैमिषकुमारजी) ❀   २०३२ | व्रजाभरणजी (कपिलकुमारजी) ❀


विशेष:—

★ श्रीवल्लभजी (१६७१) के पुत्र गोद आये।

∟ श्रीगोकुलनाथजी [१८२१] के पुत्र गोद आये।

≠ श्रीद्वारकेशजी [धम्नूजी] (जतीपुरा) [१८५२] के पुत्र प्र./२ गृ. से गोद आये।

% श्रीकल्याणरायजी [१८९५] के पुत्र, ष./२ गृ. से गोद आये

* श्रीगोपालजी [१९१०] के यहां तृ./१ गृ. में तथा श्रीगोपाललाल जी (१९१७) के यहां भी ष./२ गृ. में गोद गये।

§ श्रीव्रजभूषणजी [१८३५] के यहां गोद गये।

† श्रीघनश्यामजी [१८८६] के पुत्र प्र./५ गृ. से गोद आये।

△ श्रीबालकृष्णजी [१९२४] के पुत्र गोद आये।

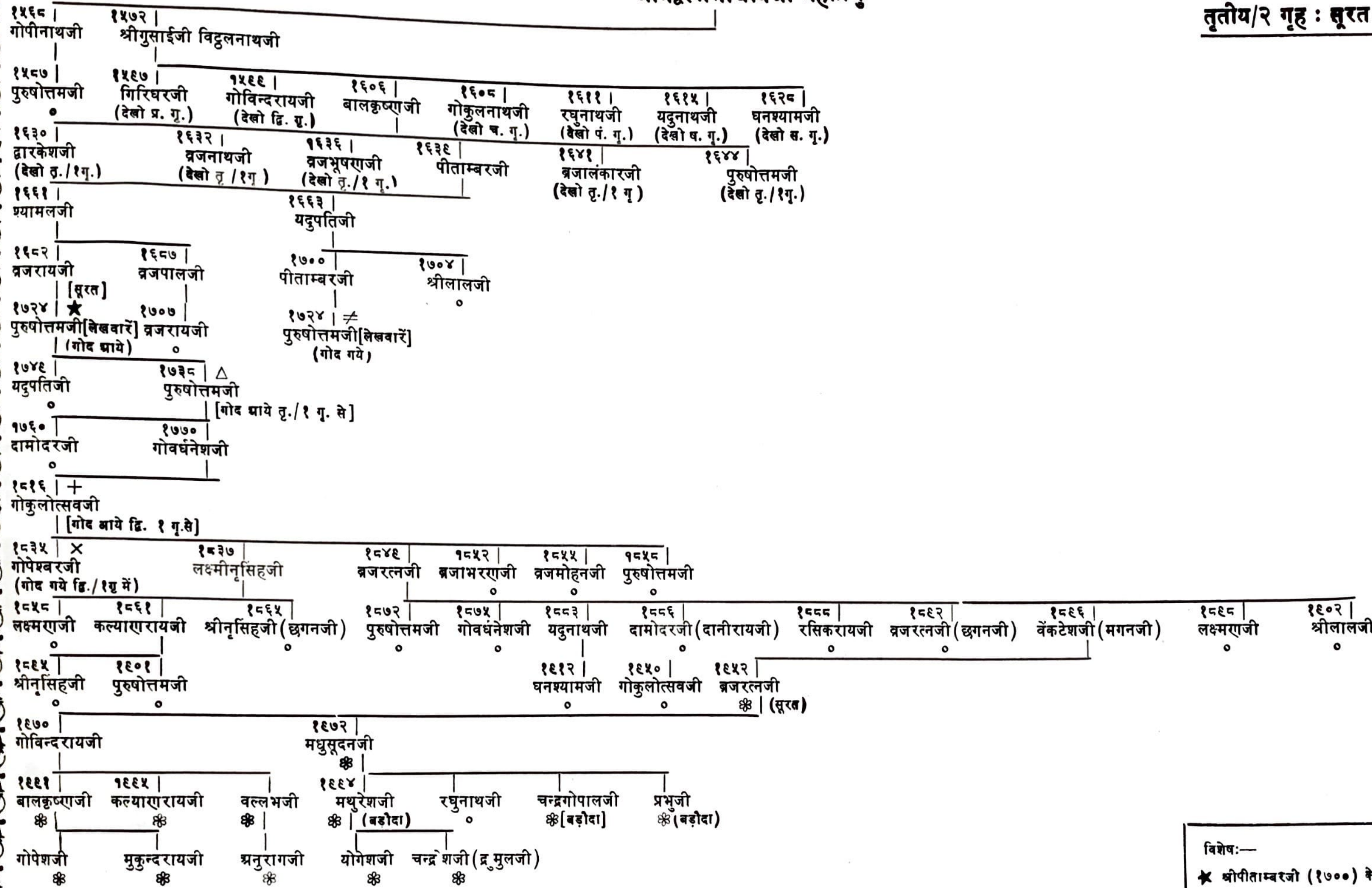
× श्रीव्रजरमणजी (१७५७) के यहां स. गृ. में गोद गये।

+ श्रीगिरिधरजी १६६२) के यहां गये।

÷ श्रीपुरुषोत्तमजी (लेखवारे) [१७२४] के यहां तृ./२ गृ. में गोद गये।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

तृतीय/२ गृह : सूरत



विशेष:—

★ श्रीपीताम्बरजी (१७००) के पुत्र गोद आये।

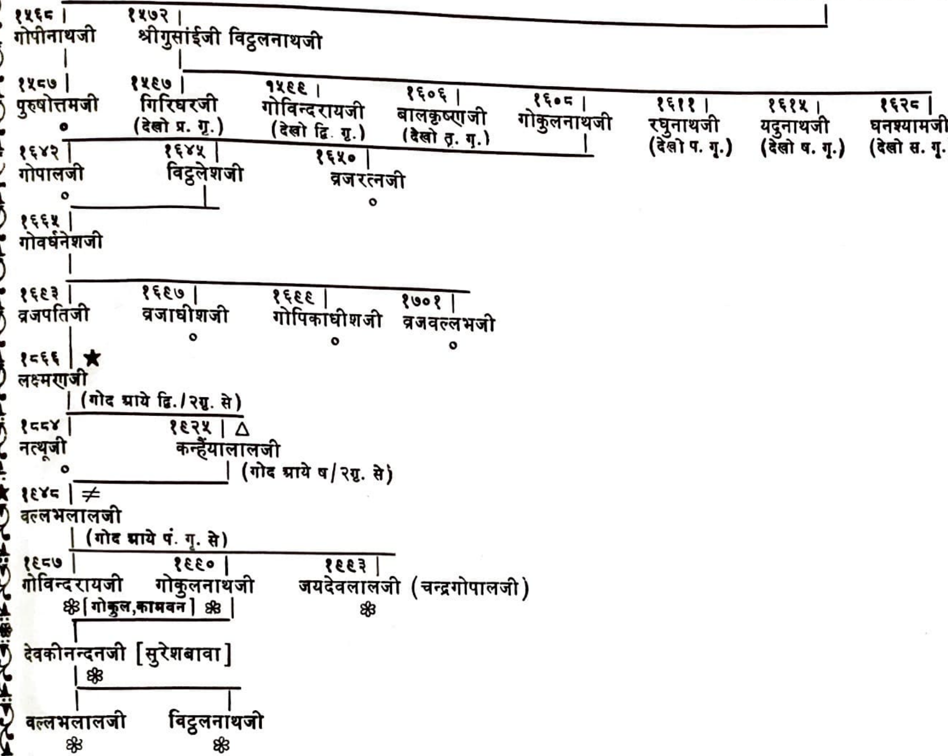
△ श्रीमुरलीधरजी [१७१८] के पुत्र तृ./१ गृ. से गोद आये।

+ श्रीगोविन्दरायजी [१७८५] के पुत्र द्वि./१ गृ. से गोद आये

× श्रीविट्ठलेशरायजी (१८११) के यहां द्वि./१ गृ. में गोद गये।

≠ श्रीब्रजरायजी [१६८२] [सूरत] के यहां गोद गये।

चतुर्थ गृह : गोकुल



विशेष—

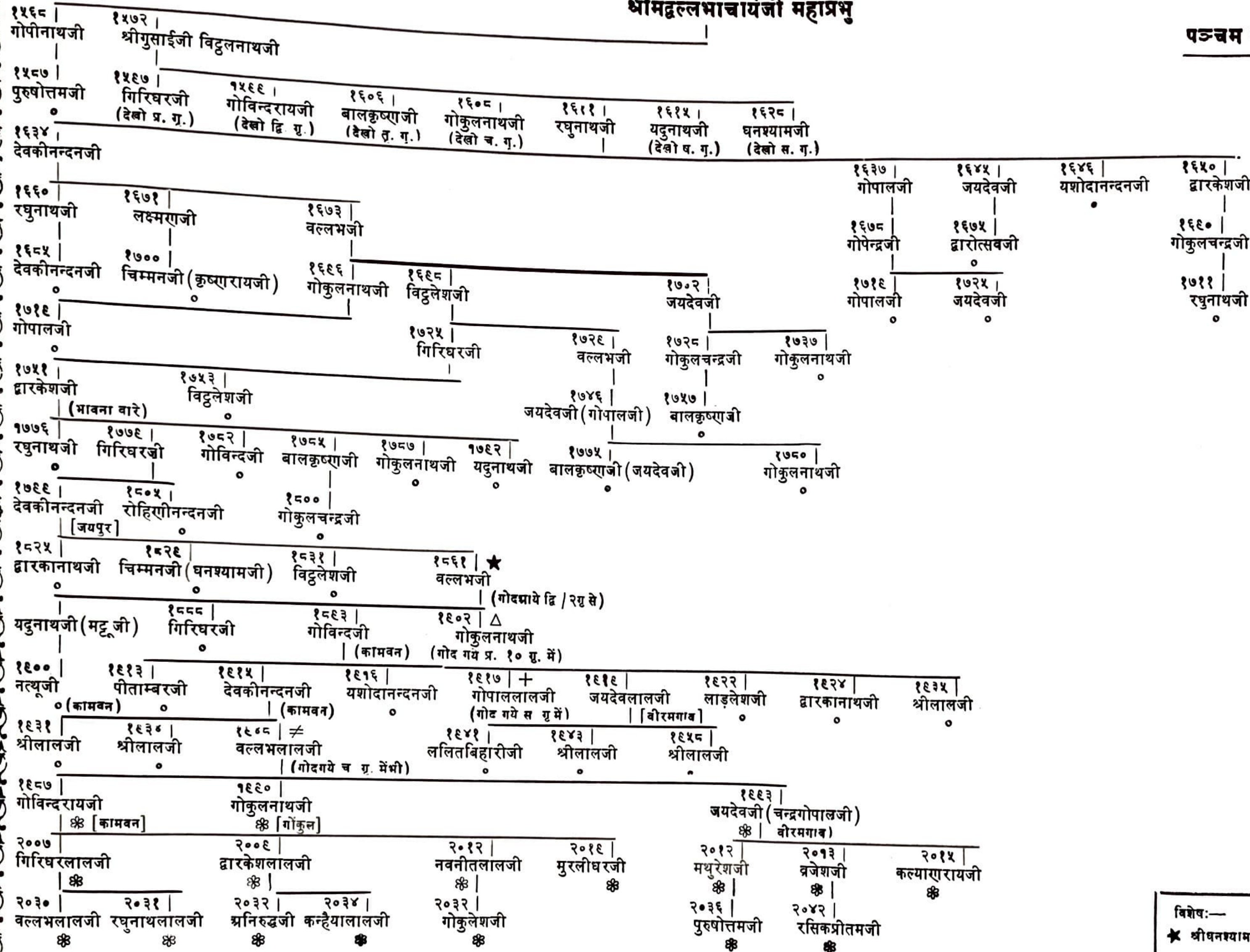
★ श्रीघनश्यामजी (१८४१)के पुत्र, द्वि./२ गृ. से गोद आये।

[श्रीव्रजपतिजी(१६९३) के श्रीभामिनी बहूजी ने अपनी भतीजी श्रीफूलकुंवर बहूजी को गादी सोंपी, जो सप्तम गृह में श्रीरमणजी (१७०४) के पुत्र श्रीव्रजोत्सवजी (१७२९) के दूसरे बहूजी थे। इनके पुत्र श्रीव्रजरमणजी(१७५७) पं. गृ [जयपुर] में श्रीगिरिधरजी [१७७९] के पुत्र श्रीदेवकीनन्दनजी [१७९९] के साथ रहे और श्रीमदनमोहनजी श्रीगोकुलनाथजी और श्रीचन्द्रमाजी भी श्रीव्रज-रमणजी के सन्तति न होने से श्रीदेवकीनन्दनजी ही तीनों स्वरूपों की सेवा करते थे। इनके तीन बहूजी थे। उनके प्रथम श्रीयमुना बहूजी ने द्वि./२ गृ. से श्रीघनश्यामजी [१८४१] के पुत्र श्रीवल्लभजी [१८६१] को गोद लेकर पंचम गृह में तिलकायत किये, द्वितीय श्रीलक्ष्मी बहूजी ने द्वि./२ गृ. से उन्हीं श्रीघनश्यामजी [१८४१] के द्वितीय पुत्र श्रीलक्ष्मणजी [१८६६] को गोद लेकर चतुर्थ गृह में तिलकायत किये और श्रीरुक्मिणी बहूजी ने तृ/१ गृ. से श्रीगोपालजी [१८२७] के पुत्र श्रीव्रजपालजी [१८६०] को गोद लेकर सप्तम गृह में तिलकायत किये।]

△ श्रीरमणलालजी(१९०४)के पुत्र, ष./२ गृ. से गोद आये।

≠ श्रीदेवकीनन्दनजी[१९१५]के पुत्र, पं. गृ. से गोद आये।

पञ्चम गृह : कामवन [श्रीचन्द्रमाजी]



विशेष:—

★ श्रीघनश्यामजी (१८४१) के पुत्र द्वि/२ गृ. से गोद आये।

≠ श्रीकन्हैयालालजी [१६२५] के यहां च. गृ. में भी गोद गये।

+ श्रीव्रजपालजी [१८५६] के यहां स. गृ. में गोद गये।

△ श्रीव्रजरत्नजी [१८२१] के यहां प्र./१० गृ. में गोद गये।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

षष्ठ/१ गृह : शेरगढ़ [बड़ौदा]

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ श्रीगुसाईजी विट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ०

१५९७ गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.) — १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ) — १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ रघुनाथजी (देखो प. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३४ मधुसूदनजी (शेरगढ़) — १६३८ रामचन्द्रजी (देखो ष./२गृ) — १६४२ जगन्नाथजी (देखो ष./३गृ) — १६४४ बालकृष्णजी ०

१६४७ गोपीनाथजी

१६६० प्रद्युम्नजी — १६६४ मुरलीधरजी ०[जोबला] — १६६४ मथुरानाथजी ० — १६६७ विट्ठलनाथजी × (गोदगये ष./२गृ. में) — १६८० चिम्पनजी △ (गोदगये ष./३गृ में)

१६९९ गोपालमणिजी ०

१७१७ विट्ठलनाथजी — १७१८ द्वारकानाथजी ०

१७६२ प्रद्युम्नजी

१७७४ मधुसूदनजी

१७८३ यदुनाथजी — १७८५ विट्ठलनाथजी + (गोदगये ष/२गृ में) — १७९३ मुरलीधरजी — १८०० दामोदरजी — १८०२ गोपालजी

१८०० द्वारकानाथजी

१८१७ गोकुलनाथजी — वालकृष्णजी ० — १८२५ विट्ठलनाथजी ० — १८३४ गोवर्धनजी ० — १८३६ मधुसूदनजी ० — १८३९ गोविन्दजी •

(भरुच) १८२८ यदुनाथजी •

१८३९ यदुपतिजी •

१८४० वल्लभजी ०

१८३६ प्रद्युम्नजी — १८५९ यदुनाथजी ०

१८६९ यदुनाथजी

१८९६ गोकुलनाथजी ० — १८९८ श्रीलालजी ० — १९०० वल्लभजी

१९२३ गिरिधरजी ★ (गोद आये ष./१गृ. से)

१९४५ श्रीलालजी ० — १९६१ वल्लभलालजी ०(बड़ौदा)

विशेष:—

★ श्रीव्रजनाथजी (१९०३) के पुत्र ष/१ गृ. से गोद आये।

+ श्रीगोकुलमणिजी [१७०५] के यहां ष./२गृ. में गोद गये।

× श्रीरामचन्द्रजी [१६३८] (मथुरा) के यहां ष./२गृ. में गोद गये

△ श्रीजगन्नाथजी [१६४२] (काशी) के यहां ष./३ गृ. में गोद गये।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

षष्ठ/२ गृह : मथुरा (मदनमोहनजी दाऊजी)

: ,, (छोटे मदनमोहनजी दाऊजी)

१५६८ | गोपीनाथजी — १५७२ | श्रीगुसाईजी विट्ठलनाथजी

१५८७ | पुरुषोत्तमजी ०

१५६७ | गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.) — १५६६ | गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०६ | बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ | गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ | रघुनाथजी (देखो प. गृ.) — १६१५ | यदुनाथजी — १६२८ | घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३४ | मधुसूदनजी (देखो ष /१गृ) — १६३८ | रामचन्द्रजी | (मथुरा) — १६४२ | जगन्नाथजी (देखो ष./३गृ) — १६४४ | बालकृष्णजी ० — १६४७ | गोपीनाथजी (देखो ष./१गृ)

१६६७ | ★ विट्ठलनाथजी | (गोद आंये ष./१ गृ. से)

१७०५ | गोकुलमणिजी

१७८५ | + विट्ठलनाथजी | (गोद आये ष /१ गृ. से)

१८०५ | पुरुषोत्तमजी | (ख्यालवारे) — १८०७ | □ कल्याणरायजी ० — १८०८ | गोपीनाथजी ० — १८१० | × गोपालजी (गोद गये ष /३गृ में) — १८२१ | गिरिधरजी ०

१८३७ | कल्याणरायजी ० — १८३९ | ब्रजपालजी — १८४५ | गोकुलनाथजी ० — १८४७ | मथुरानाथजी ०

१८७१ | मथुरानाथजी ० — १८७५ | विट्ठलनाथजी — १८७९ | पुरुषोत्तमजी

१८९५ | कल्याणरायजी | [जोड़ला] — १८९५ | गोविन्दजी ० — १८९७ | मुरलीधरजी ० [जोड़ला] — १८९७ | श्रीलालजी ० — १८९९ | गोवर्धनजी ० — १९०१ | गोविन्दजी ० — १९०३ | ब्रजनाथजी | [जोड़ला] — १९०३ | गोकुलनाथजी ० — १९०८ | श्रीलालजी ०

१९०२ | श्रीलालजी ० — १९०४ | रमणलालजी

१९१७ | गोपाललालजी — १९२० | गोविन्दजी ० — १९२२ | △ जीवनलालजी [गोद गये ष./३ गृ. में] — १९२४ | § बालकृष्णजी (गोद गये तृ./१ गृ. में)

१९२० | वेंकटेशजी ० — १९२३ | † गिरिधरलालजी (गोद गये ष./१गृ. में) — १९२५ | * मधुसूदनजी (गोद गये .प्र/८ गृ. में) — १९२७ | श्रीलालजी ०

१९२३ | ब्रजपालजी — १९२५ | & कन्हैयालालजी (गोद गये च. गृ. में) — १९२८ | श्रीलालजी ० — १९३२ | ≠ घनश्यामलालजी (गोद गये प्र./१० गृ. में)

१९७० | ∟ विट्ठलनाथजी ❀ | (गोद आये तृ /१ गृ से) (मथुरा)

१९४९ | % दामोदरलालजी | (गोदआये प्र /१० गृ. से)

प्रद्युम्नजी ० — १९८८ | यदुनाथजी ❀ | [मथुरा] — वेंकटेशजी ० — कृष्णकुमारजी ❀ [कांकरोली] — अक्षयकुमारजी ❀ | (काशी) — राजेन्द्रकुमारजी ❀ | [बड़ौदा]

| ÷ पुरुषोत्तमलालजी ० (गोदगये प्र./११ग्र. में) — ब्रजरमणलालजी ❀ | [मथुरा]

२०२७ | शरदकुमारजी | ❀ — २०१५ | प्रवोधकुमारजी ❀ — प्रणयकुमारजी ❀ — परितोषकुमारजी ❀ — पंकजकुमारजी ❀ — रविकुमारजी ❀

प्राणवल्लभजी ❀ — २०३८ | रसिकवल्लभजी ❀

गोपाललालजी ❀ — ब्रजभूषणलालजी ❀

ब्रजवल्लभजी (देवकुमारजी) ❀

विशेषः—

★ श्रीमधुसूदनजी (१६३४) [शेरगढ़] के पुत्र ष/१ गृ. से गोद आये।
\+ श्रीप्रद्युम्नजी [१७६२] के पुत्र ष./१ गृ. से गोद आये।
× श्रीजीवनजी [१७७५] के यहां ष./३गृ. में गोद गये।
∟ श्रीबालकृष्णजी (१९२४) के पूत्र तृ./१ गृ. से गोद आये।
△ श्रीगिरिधरजी [१८४७] के यहां ष./३ गृ. में गोद गये।
§ श्रीगिरिधरजी (१८९६) के यहां तृ /१ गृ. में गोद गये।
† श्रीवल्लभजी (१९००) के यहां ष./१ गृ. में गोद गये।
* श्रीव्रजरायजी (१८९७) के यहां प्र./८ गृ. में गोद गये।
% श्रीघनश्यामलालजी (१९३२) के पुत्र प्र./१०गृ. से गोद आये।
÷ श्रीगोपालजी (१९२४, के यहां प्र./११ गृ. में गोद गये।
& श्रीलक्ष्मणजी (१८६६) के यहां च. गृ. में गोद गये।
≠ श्रीविट्ठलेशजी (१९०८) के यहां प्र./१० गृ. में गोद गये।
□ श्रीकल्याणरायजी (१८०७) के यहां गये।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

षष्ठ/३ गृह : काशी

१५६८ गोपीनाथजी — १५७२ श्रीगुसाईजी विट्ठलनाथजी

१५८७ पुरुषोत्तमजी ०

१५९७ गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.) — १५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.) — १६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.) — १६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.) — १६११ रघुनाथजी (देखो प. गृ.) — १६१५ यदुनाथजी — १६२८ घनश्यामजी (देखो स. गृ.)

१६३४ मधुसूदनजी (देखो ष /१गृ) — १६३८ रामचन्द्रजी (देखो ष. /२गृ) — १६४२ जगन्नाथजी (काशी) — १६४४ बालकृष्णजी ० — १६४७ गोपीनाथजी (देखो ष./१गृ)

१६८० ★ चिम्मनजी (गोद आये ष./१ गृ. से)

१७०० माधवरायजी ० — १७०२ गोपालजी ० — १७०३ पुरुषोत्तमजी — १७०४ कल्याणरायजी

१७३४ यदुनाथजी ०

१७३७ गिरिधरजी — १७३९ व्रजपतिजी ० — १७४२ श्रीलालजी ०

१७७५ जीवनजी — १७७७ व्रजनाथजी ० — १७८१ जगन्नाथजी ० — १७८४ वेंकटेशजी ०

१८१० + गोपालजी (गोद आये ष./२ गृ. से)

१८४७ गिरिधरजी

१९२२ × जीवनलालजी (गोद आये ष /२ गृ. से)

१९५३ गिरिधरलालजी — १९५४ राजीवलोचनजी ० — १९५६ श्रीलालजी ० — १९६१ त्रिलोकीभूषणजी (मुरलीधरजी) ० (काशी)

१९७९ श्रीलालजी ० — १९८१ श्रीलालजी ०

विशेषः—

★ श्रीमधुसूदनजी (१६३४) के पुत्र ष/१ गृ. से गोद आये।

+ श्रीविट्ठलनाथजी [१७९५] के पुत्र ष./२ गृ. से गोद आये।

× श्रीकल्याणरायजी [१८९५] के पुत्र ष./२ गृ. से गोद आये।

सप्तम गृह : कामवन (श्रीमदनमोहनजी)

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

- १५६८ । गोपीनाथजी
  - १५८७ । पुरुषोत्तमजी ०
- १५७२ । श्रीगुसाईजी विट्ठलनाथजी
  - १५९७ । गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.)
  - १५९९ । गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.)
  - १६०६ । बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.)
  - १६०८ । गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.)
  - १६११ । रघुनाथजी (देखो प. गृ.)
  - १६१५ । यदुनाथजी (देखो ष. गृ.)
  - १६२८ । घनश्यामजी
    - १६५२ । व्रजपालजी ०
    - १६६३ । चाचा गोपीशजी
      - १६७६ । उपहारीजी (उपेन्द्रजी) ०
      - १६८२ । गोपालजी ०
      - १७०१ । कीर्तिकुमारजी (श्रीकान्तजी) ०
      - १७०४ । श्रीरमणजी
        - १७२६ । व्रजोत्सवजी
          - १७५७ । व्रजरमणजी
            - ★ व्रजपालजी (गोद आये तृ/१ गृ से)
              - १८०५ । घनश्यामजी ०
              - १८१७ । △ गोपाललालजी (गोद आये प. गृ. से)
                - १८५० । श्रीरमणजी (कामवन)
                  - १८७६ । घनश्यामजी ❃
                    - व्रजेशकुमारजी ❃
                    - गोपाललालजी ❃
                      - श्रीलालजी ❃
                    - कल्याणरायजी ❃
                  - १८८१ । रघुनाथजी ❃ [गोकुल] (बम्बई)
                    - योगेशकुमारजी ❃
                      - धारला-प्र./१० गृह में
                  - १८९९ । कृष्णकुमारजी ❃ (बम्बई)
                    - शिशिरकुमारजी ❃
                      - बांदीवली प्र./१० गृह में



विशेष:—

★ श्रीगोपालजी (१८२७) के पुत्र तृ/१ गृ. से गोद आये।

△ श्रीगोविन्दजी [१८९३] के पुत्र प. गृ. से गोद आये।